ISSN 2349-6614

सितम्बर 2021

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

एक सदी बाद एथेलेटिक्स में

भारत को 'सोना'

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 19 अंक 5, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

निजी क्षेत्र में सबसे रियायती दर पर कैंसर का इलाज

विश्वविख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. कीर्ति जैन के नेतृत्व में संचालित

दक्षिणी राजस्थान का पूर्ण
अत्याधुनिक कैंसर सेंटर

सबसे न्यूनतम पैकेज पर

3D CRT | IMRT | IGRT

- मेडिकल ऑन्कोलॉजी
- पीडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी
- ऑन्कोरेडियोलॉजी
- न्यूरोऑन्को सर्जरी

फिजियो एवं रिहेबिलिटेशन विभाग

- सर्जिकल ऑन्कोलॉजी
- ऑन्कोपेथोलॉजी
- ऑन्कोप्लास्टिक सर्जरी
- पेन क्लिनिक

फूड एवं न्यूट्रीशन विभाग

एक ही छत के नीचे सभी प्रकार के कैंसर के इलाज की सुविधा	इंटरनेशनल कैंसर बोर्ड से इलाज	देश की नामी संस्थाओं से प्रशिक्षित डॉक्टर्स व स्टाफ	ईएसआईसी, रेलवे, कॉर्पोरेट व टीपीए से अनुबन्धित	आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना से अधिकृत

जी.बी.एच. जनरल हॉस्पिटल मेमोरियल कैंसर सेन्टर

ट्रांसपोर्ट नगर, बेड़वास, उदयपुर । सम्पर्क : 0294-3536000

सितम्बर 2021 वर्ष 19, अंक 5

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

अंदर के पृष्ठों पर...

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

वीक रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

पर्यटन

कर्नाटक का कश्मीर - कूर्ग
18

हलचल

लालू यादव ने उड़ाई नेताओं की नींद
20

परख

हर 'जेवर' का भी 'आधार'
24

वास्तु

उचित दिशा में हरियाली
32

वार्षिकी

बालासुब्रहमण्यम ने एक दिन में रिकॉर्ड किए थे 21 गाने
42

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

प्रदेशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
वर्ल्ड ओलम्पिक में शानदार प्रदर्शन
व मैडल जीतने के लिए
सरस परिवार की
ओर से हार्दिक बधाइयां
सरस अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि., अजमेर
ISO 22000:2005 प्रमाणित संगठन)
माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा कोरोना के विरुद्ध प्रारम्भ किये गये जन जागरण अभियान के लिए आभार
हारेगा कोरोना
जीतेगा इण्डिया
कोरोना अभी गया नहीं · सावधानी रखना जरूरी है।
कोरोना से जीती जंग कहीं हम हार न जाएं इसलिए हर जरूरी सावधानी अपनाएं
पहनिए मास्क
धोइए हाथ
रखिए दो गज दूरी
अजमेर सरस डेयरी के 13 देशों से आयातित आधुनिक तकनीक के समावेश
से निर्मित संयंत्र द्वारा उत्पादित विश्व स्तर के दूध व दुग्ध उत्पाद
अजमेर डेयरी की
प्रारम्भ
सरस
आईसक्रीम
सरस
बटर स्कोच, केसर पिस्ता
काजू द्राक्ष, चॉकलेट,
वनीला, स्ट्रॉबेरी फ्लेवर्स
कोन आईसक्रीम
बटर स्कोच, चॉकलेट,
वनीला, स्ट्रॉबेरी फ्लेवर्स
कैंडी
चॉकलेट
मैंगो, ऑरेंज
रोज
आईसक्रीम ब्रिक
फैमिली पैक
वनीला, केसर पिस्ता,
स्ट्रॉबेरी,
बटर स्कोच फ्लेवर्स
सरस
फ्लेवर्ड
मिल्क
चॉकलेट
मैंगो
स्ट्रॉबेरी
केसर
रोज
इलायची
मटका दही
5 कि.ग्रा.
पैक्ड पॉश्च्युराईज्ड सरस दूध की किस्में
सरस फरमेन्टेड (जावण) दुग्ध उत्पाद
सरस दीर्घावधि उत्पाद
बटर – 100 ग्राम, 500 ग्राम
व्हाइट बटर – 15 कि.ग्रा. के स्लेब्स में उपलब्ध
सरस कॉग्युलेटेड एवं खोया उत्पाद
पनीर
फीका मावा
बर्फी
पेड़ा
सरस घी
सरस दुग्ध पाउडर
सरस, दूध एवं दूध उत्पादों हेतु मोबाईल (चलायमान)
बिक्री केन्द्रों हेतु (ई-रिक्शा, ट्रॉय साइकि आदि) जिसमें
प्रशीतन की सुविधा हो पूछताछ आमंत्रित की जाती है।
विशेष निवेदन

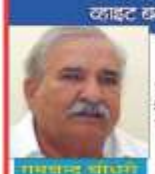

हिंदी को अब भी हक़ की प्रतीक्षा

सरकारें जब कोई वादा एक समय सीमा में पूरा नहीं करती तो उन्हें जनाक्रोश का सामना करना ही पड़ता है। ऐसे कई नए-पुराने वादे हैं, जो सरकारों, उनमें प्रतिनिधित्व करने वालों और जनता को भी याद हैं, किंतु उन्हें पूरा नहीं किया जा सका है। बहरहाल, इनमें एक वादा ऐसा भी है, जिसे आश्वासनों के बावजूद पूरा करने की दिशा में आज तक कोई भी सरकार गंभीर नज़र नहीं आई। यह वादा है – हिन्दी को पूरी तरह से राजभाषा के पद पर आसीन करना। जनमानस भी इस मामले में उतना सक्रिय नहीं रहा, जितना प्याज-पेट्रोल पर बढ़ते दामों को लेकर रहा। देश को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त हुए 74 वर्ष पूरे हुए और राष्ट्र स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस दौरान दर्जन भर से अधिक विश्व हिन्दी सम्मेलन देश-विदेश में आयोजित भी हुए किन्तु वादे के मुताबिक हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं किया जा सका है। देश के पास न कोई राष्ट्रभाषा है और न कोई भाषा नीति। हिन्दी जहां ठहरी, ठिठकी हुई थी, आज भी लगभग वहीं है। तब एकमत से यह स्वीकार किया गया था कि पन्द्रह वर्ष की अवधि में इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान कर दिया जाएगा। हालांकि इस दिशा में प्रयत्न ज़रूर हुए, कुछ आगे भी बढ़ा गया किन्तु समग्र रूप से वादे की क्रियान्वित नहीं हो सकी। आज़ादी के बाद के कुछ वर्षों में गृह मंत्रालय में राजभाषा विभाग का सृजन हुआ। सभी मंत्रालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां भी बनीं। राज्यों और नगरों में भी सरकारी विभागों में इस हिदायत के साथ राजभाषा अधिकारी नियुक्त हुए कि वे मंत्रालयों-विभागों का कामकाज पूर्णत: हिन्दी भाषा में करने के लिए कदम उठाएं, किन्तु ऐसा इसलिए नहीं हो सका क्योंकि राजनैतिक आग्रहों के चलते केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयत्नों में ढिलाई से राजभाषा अधिकारी भी विभागों में ठोस कदम उठाने की बजाय सजावटी वस्तु मात्र बनकर सरकार की मंशा के साथ कदमताल करने लगे। हिन्दी को उसके अधिष्ठात्री पद पर आसीन करने का संकल्प हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा, सेमीनार और प्रशिक्षण तक सीमित रह गया। यह ढर्रा आज भी विभागों में छोटे-बड़े बजट खर्च के साथ जारी है।

भाषा राष्ट्र, समाज और परिवार की संस्कृति, संस्कार और स्वाभिमान की वाहक होती है। विदेशी भाषा के माध्यम से हम अपने और समाज के सुख-दु:ख और योगक्षेम को न तो ठीक से समझ सके हैं और न ही समझा सके हैं।

स्वदेशी आन्दोलन के समय विदेशी वस्तुओं-वस्त्रों का तो बहिष्कार हुआ, उन्हें फूंका, पर विदेशी भाषा को नहीं त्यागा। इससे बड़ा क्या दुर्भाग्य हो सकता है कि देश के संविधान का प्रारूप ही विदेशी भाषा में बना। बड़ी विडम्बना यह रही कि हिन्दी के पक्षधरों ने भी अपना मत अंग्रेजी में रखा। भाषा सम्बंधी अनुच्छेदों पर तीन सौ से अधिक बार संशोधन की प्रस्तुति के पश्चात् अन्तत: जब 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी भाषा संविधान का भाग बनी, तो भाषा की दृष्टि से सम्पूर्ण राष्ट्र के एक सूत्र में बंधने की आशा बंधी। पन्द्रह वर्षों के लिए अंग्रेजी को कामकाज की भाषा रखा गया। योजना थी कि धीरे-धीरे अंग्रेजी को हटा दिया जाएगा पर, 'पन्द्रह वर्ष बीतने से पूर्व ही' अंग्रेजी को अनिश्चितकाल तक बनाए रखने का प्रस्ताव पारित हो गया। हिन्दी सहचरी भाषा बन कर रह गई।

हिन्दी प्रेमी सभी भारतीय भाषाओं के साथ एकजुटता दिखाते हुए 14 सितम्बर (हिंदी दिवस) को 'भारतीय भाषा संकल्प दिवस' के रूप में मनाएं तो ज्यादा बेहतर है। भारत की आम जनता अंग्रेजी भाषा के विरूद्ध नहीं है, बल्कि अपने देश में अंग्रेजी के वर्चस्व के विरूद्ध है और इस स्थिति को बदलने के लिए अब संघर्ष का मार्ग ही विकल्प है। जब तक हिन्दी दैनन्दिन कामकाज, चिंतन और रोजगार की भाषा नहीं बनेगी तब तक हिन्दी के नाम पर तमाम विमर्श अधूरे और बेमानी हैं।

अफ़गानिस्तान में तख्ता पलट

मनीष उपाध्याय

अफगानिस्तान में अमेरिकी सेना की पूरी तरह से वापसी के पहले ही 15 अगस्त को तालिबानी लड़ाकों ने अशरफ गनी की सत्ता का तख्ता पलट कर सत्ता को अपने कब्जे में कर लिया। चार करोड़ की आबादी वाले देश पर अब आतंक का राज होगा और पड़ौसी राष्ट्रों के लिए एक नया सिरदर्द। विश्व समुदाय को लग रहा था कि 31 अगस्त को जब अमेरिका अफ़गानिस्तान से पूरी तरह हट जाएगा, उसके बाद तालिबानी राष्ट्रपति अशरफ गनी से सत्ता की मांग को लेकर संघर्ष छेड़ेंगे, लेकिन 16 दिन पहले ही अमेरिका की उपस्थिति में उसने अशरफ गनी सरकार को खदेड़ कर सत्ता पर अपनी मोहर ठोक दी और अमेरिका देखता रह गया।

पाकिस्तान में खुशी का इजहार हो रहा है। इमरान खान कह रहे हैं कि अफ़गानिस्तान में गुलामी की जंजीरें टूट गई हैं। तालिबानी लड़ाकों के काबुल में घुसने के पहले ही राष्ट्रपति अशरफ गनी पर्याप्त माल-असबाब के साथ देश छोड़कर भाग खड़े हुए और उन लाखों लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया, जिन्होंने उनका और अमेरिकी सेना का साथ दिया था। वे आतंक के राज के खिलाफ थे।

रूस, चीन और पाकिस्तान ने तालिबान को सरकार के रूप में मान्यता देने की घोषणा की है, जबकि भारत सरकार इन पंक्तियों के लिखे

स्पीकर कक्ष पर लड़ाकों का कब्जा

जाने तक वेट एण्ड वॉच की स्थिति में है। घटना के फौरन बाद देश छोड़ने की आपाधापी में कई लोग मारे गए। संयुक्त राष्ट्र ने तत्काल आपात बैठक बुलाकर आसन्न खतरे की समीक्षा की। सुरक्षा परिषद के महासचिव ने खतरे के खिलाफ दुनिया को एकजुट होने को कहा है।

अफ़गानिस्तान में अमेरीका के समर्थन वाली सरकार ने बहुत तेजी से सत्ता की सीढ़ियां चढ़े तालिबान के आगे घुटने टेक दिए हैं और अपनी सत्ता का ऐलान कर दिया है। अमरीका की मौजूदगी में काबुल में आतंक के राज की वापसी की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। राष्ट्रपति देश छोड़ पलायन कर चुके हैं।

संयुक्त राष्ट्र स्वयं घटना को लेकर सकते में है। अब भारत के लिए अपने पश्चिमी पड़ोसी देशों से नई चुनौतियां शुरू हो सकती हैं। इनका सामना भारत को बहुत ही राजनयिक चतुरता और समझ से करना होगा। विश्व समुदाय के साथ रहते हुए यदि जरूरत पड़े तो तालिबान से

परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष वार्ता के द्वार भी खुले रखने होंगे। अफ़गानिस्तान के इतिहास का जो अध्याय नवंबर 2001 में अमेरिका के अफ़गानिस्तान में प्रवेश के साथ शुरू हुआ था, उसका अब अंत हो रहा है। करीब तीन दशक पूर्व जहां सोवियत संघ को यहां सामरिक शिकस्त का सामना करना पड़ा था, आज वही गत अमेरिका की हुई है। दरअसल, पिछले साल फरवरी में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सरकार और तालिबान के बीच समझौता हुआ था, जिसकी बुनियाद यही थी कि तालिबान अलकायदा, आईएस जैसी अंतरराष्ट्रीय आतंकी तंजीमों को पनाह नहीं देगा और बदले में अमेरिका वहां से अपनी सेनाओं को पहली मई 2021 तक स्वदेश बुला लेगा। नए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने सत्ता संभालने के बाद यह तय किया कि वह ट्रंप और तालिबान के समझौते का आदर करेंगे। हालांकि उन्होंने अमेरिकी सेनाओं को वापस बुलाने की अवधि 11 सितम्बर तक बढ़ा दी थी। इन सबके बीच ऐसा प्रतीत हो रहा था कि तालिबान और बाइडन सरकार के बीच एक समझ बन गई है कि अफगान हुकूमत और

तालिबान मिलकर एक अंतरिम सरकार बनाएंगे, जिसके बाद युद्ध विराम होगा और फिर अफ़गानिस्तान की नई संवैधानिक प्रणाली पर विचार होगा, लेकिन तालिबान ने इस बिसाात को पलट कर अपने इरादों का संकेत दे दिया है।

75 वें स्वाधीनता दिवस पर हार्दिक बधाई

चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

राष्ट्रभक्ति के तराने हम गाएं, सब मिलकर भारत महान बनाएं
देखे थे जो सपने शहीदों ने, वैसा भारत राष्ट्र बनाएं

इन सुविधाओं के साथ त्वरित बैंकिंग सुविधा

Mobile Banking & IMPS | Physical to Digital Banking | Debit Card | Education Loan, House Loan Vehicle Loan, All Business Loan

एडवोकेट विमला सेठिया, चेयरपर्सन | शिवनारायण मानधना, उपाध्यक्ष | डॉ. आई.एम. सेठिया, संस्थापक अध्यक्ष | वंदना वजीरानी, प्रबंध निदेशक

संचालक मण्डल के सदस्य

डॉ. महेश सी. सनाढ्य, हस्तीमल चोरड़िया, शांतिलाल पुंगलिया, आदित्येन्द्र सेठिया, विनोद आंचलिया, राधेश्याम आमेरिया, सुनीता सिसोदिया, चांदमल नंदावत, बालकिशन धूत, रणजीतसिंह नाहर, सीए बालकृष्ण डाड एवं समस्त अरबन बैंक परिवार।

प्रधान कार्यालयः केशव माधव सभागार परिसर, एनसीएस सिटी, चित्तौड़गढ़, मो. 8003590333

हमारी शाखाएं

एस.एस. प्लाजा, स्टेशन रोड, कपासन | दक प्लाजा, हॉस्पीटल रोड, बड़ीसादड़ी | सर्वोदय साधना संघ, चंदेरिया | मण्डी चौराहा, निम्बाहेड़ा | मिस्त्री मार्केट, बेगूं

कोरोना वेक्सीन अवश्य लगवाएं, घर से बाहर मास्क अवश्य पहनें, सोशल डिस्टेंस रखें।

माननीयों के शोर में दबा मानसून सत्र

भगवान प्रसाद गौड़

संसद का मानसून सत्र हंगामे की भेंट चढ़ गया। लोकसभा अध्यक्ष ने 11 अगस्त को सदन की कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया। पेगासस जासूसी मामला, तीन केन्द्रीय कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग, सहित अन्य मुद्दों पर विपक्षी दल सरकार को घेरते रहे। सदन में हंगामा होता रहा जिसकी वजह से पूरे सत्र में सदन में कामकाज बाधित रहा और केवल 21 फीसदी कार्य संपन्न हुआ। इनमें भी 10 अगस्त को ओबीसी से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक पर चली लंबी चर्चा भी शामिल है। यदि 10 अगस्त के कामकाज को अलग कर दिया जाए तो हर दिन बहुत कम काम सदन में हुआ। 17वीं लोकसभा की छठी बैठक 19 जुलाई को शुरू हुई और इस दौरान 17 बैठकों में 21 घंटे 14 मिनट कामकाज हुआ। सदन में कामकाज अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा। व्यवधान के कारण 96 घंटे में करीब 74 घंटे कामकाज नहीं हो सका।

निरंतर व्यवधान के कारण महज 22 फीसद कार्य निष्पादन रहा। सत्र के दौरान संविधान (127वां संशोधन) विधेयक सहित कुल 20 विधेयक पारित किए गए। मानसून सत्र के दौरान 66 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए और सदस्यों ने नियम 377 के तहत 331 मामले उठाए। इस दौरान विभिन्न स्थायी समितियों ने 60 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए, 22 मंत्रियों ने वक्तव्य दिए। हालांकि सत्र के दौरान अनेक वित्तीय एवं विधायी कार्य पूरे किए गए।

राज्यसभा में जो कुछ भी घटा उसे संसद की गरिमा के लिए कतई भी उचित नहीं माना जा सकता। कृषि कानूनों व कृषि क्षेत्र की समस्या को लेकर होने वाली चर्चा को लेकर 10 अगस्त को सदन में नियमों के बारे में जो विवाद पैदा हुआ उसके चलते विपक्षी सांसद प्रतापसिंह बाजवा महासचिव की मेज पर चढ़ गए और नियम पुस्तिका को आसन की तरफ फेंक दिया। जाहिर है कि विपक्षी सदस्य विरोध की ही रणनीति पर चल रहे थे। जो हरकत हुई वह संसदीय प्रणाली की पवित्रता व गरिमा के खिलाफ थी। मानसून सत्र के पहले दिन से लेकर सत्र के समाप्ति क्षणों तक विपक्ष हंगामा ही करता रहा ताकि किसी विषय पर कोई चर्चा ही नहीं हो सके। सत्तापक्ष व विपक्ष के बीच गतिरोध के लिए कई प्रयास भी हुए, लेकिन दोनों ही पक्ष अड़ियलपन पर कायम रहे। यानी सत्ता पक्ष व विपक्ष राष्ट्रहित व लोकहित की चिंता कम और अपने-अपने दलीय हित व राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति को अधिक महत्व देता रहा है। विपक्ष कृषि कानूनों की वापसी पर अड़ा रहा और सरकार कानूनों पर चर्चा के लिए तैयार नहीं थी।

लोकतंत्र में विरोध प्रकट करने का अधिकार है, लेकिन विरोध के साथ-साथ संसदीय प्रणाली की पवित्रता व गरिमा का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। हंगामे के लिए सत्तापक्ष व विपक्ष दोनों जिम्मेदार हैं। पिछले अनुभवों से तो यही सामने आया है कि कभी सत्ता पक्ष और कभी विपक्ष की हठधर्मिता ही गतिरोध का कारण बनती है। गतिरोध भी ऐसा, जिससे हमारे लोकतंत्र की जड़ें कमजोर होती हैं। देश की जनता अपना कीमती वोट देकर जिन उम्मीदों से जनप्रतिनिधियों को भेजती है, वे भी समय की कीमत और लोकतंत्र के मान और मूल्य नहीं समझ रहे यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है। सदनों की कार्यवाही भविष्य में इस तरह बाधित हो तो उसकी कीमत भी इन्हीं चुनिंदा माननीयों से वसूली जानी चाहिए।

जब निर्वाचित प्रतिनिधि सदन में अच्छा माहौल नहीं बना सकते, तो देश में कैसे गरिमा बनाए रखेंगे? क्या भारतीय लोकतंत्र में व्यवहार का एक स्तर नहीं होना चाहिए? शोर-शराबा करने वाले और इससे लाभ उठाने वाले हर नेता को अपने गिरेबां में झांकना होगा। लोकतंत्र में सड़क पर और चुनावी मैदानों में तो संघर्ष समझ में आता है, लेकिन वहां भी मर्यादाएं लांघी जा रही हैं। लेकिन जब ऐसा ही राजनीतिक संघर्ष सदन में आ जाए, तो सदन के गौरव को ठेस पहुंचती है।

पिछले सत्रों में अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति बनने लगी थी, लेकिन मानसून सत्र ने बेहद निराश किया। बेशक, कोरोना पर एक व्यापक बहस के साथ देश की तमाम उन कमियों पर विस्तार से चर्चा होनी चाहिए थी, जिन्होंने कोरोना की दूसरी लहर के समय देश को हिला दिया, लेकिन माननीय चूक गए। उम्मीद है कि अगली बार जब सांसद बैठे तो सदन और लोकतंत्र के मान, मूल्य, मर्यादा और गरिमा का पूरा ख्याल रखा जाकर जनता को निराश नहीं होने दिया जाएगा और उनकी व देश की समस्याओं के समाधान को लेकर सार्थक चर्चा के साथ मार्ग निकाला जाएगा।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)
75वें स्वाधीनता दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं
JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.
SELECTED
Superbrand
INDIA 2009-10
CONSUMER VALIDATED

राजस्थानः प्रदेश कांग्रेस और सत्ता के लिए चुनौतियां

राजस्थान में कांग्रेस के कद्दावर नेता अशोक गहलोत ही हैं। जिन्होंने वर्षों तक प्रदेश का लगातार चप्पा-चप्पा छानकर पार्टी संगठन को मजबूत किया। वे अकेले ऐसे नेता हैं, जो भाजपा के बड़े नेताओं व नीतियों का मुखर विरोध करते रहे हैं। उनमें आमजन की सेवा का जज्बा है। प्रदेश के गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में उनके इशारे पर पार्टी के लिए दौड़ पड़ने वाले कार्यकर्ता हैं। हर वर्ग और क्षेत्र में उनकी गहरी पैठ है।

डॉ. सत्यनारायण सिंह

मौजूदा दौर में देखें तो कांग्रेस की कमजोरी व हार का मुख्य कारण उसके आंतरिक संगठन में ही निहित है। चुनाव जीतने के लिए पार्टी संगठन के एकजुट होने की जो आवश्यकता होती है, उसका परिचय कांग्रेस नहीं दे पा रही। कांग्रेस जैसी 125 साल पुरानी राष्ट्रीय पार्टी के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी के अलावा ऐसा कोई नेता नहीं है जिसका नेतृत्व बिना गुटबाजी के सबको स्वीकार हो। प्रांतीय पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं का नेतृत्व के प्रति अविश्वास और अनुशासनहीनता पार्टी के रणनीतिकारों के लिए गंभीर चिंता का विषय है। राजनीतिक चिंतन, विचारधारा एवं आदर्शों के आधार पर काम करने वाले आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। पार्टी नेता जनहित के बजाय निजी स्वार्थों को अहमियत देते देखे जाते हैं। पद लोलुपता बढ़ रही है, नई सदस्यता ग्रहण कर राजनीति की शुरुआत करने वालों में कमिटमेंट नहीं है। कोई कैडर नहीं है। पूर्णकालिक कार्यकर्ता नहीं है। नई कार्य संस्कृति से जमीन से जुड़े कार्यकर्ता पीछे छूट गए हैं। परम्परागत वोट बैंक अब नहीं रहा।

राजस्थान में कांग्रेस के कद्दावर नेता अशोक गहलोत हैं। वर्षों तक लगातार प्रदेश का चप्पा-चप्पा छानकर पार्टी को मजबूत किया। अकेले भाजपा के कद्दावर नेताओं का खुलकर विरोध कर सकते हैं। उनमें आमजन की सेवा का जज्बा है, वैसा किसी अन्य नेता में नहीं है। प्रदेश के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में गहलोत के कार्यकर्ता हैं। छत्तीस कौमों और क्षेत्र पर गहरी पकड़ है। उन्हें केवल अपने विधानसभा क्षेत्र अथवा दो-चार जिलों में जातिवाद के कारण प्रभाव रखने वाले नेताओं का विरोध सहन करना पड़ रहा है। यह लोग सरकार के विरुद्ध वक्तव्यों से भाजपा को अवसर दे रहे हैं। खुल्लम-खुला अनुशासन तोड़ते हैं, हाईकमान उन पर लगाम लगाने में सफल नहीं हो रहा है। लांछन लगाया जाता है वर्ष 2003 में 153 विधानसभा सदस्य जीते और वर्ष 2013 में 21 रह गए। राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तर पर कांग्रेस संगठन में ऐसे बदलाव हो जिससे नए पुराने नेताओं के बीच खाई कम हो। अनुशासनहीन लोगों को, चाहे वे कितने ही बड़े हों, बाहर का रास्ता दिखाया जाए। राहुल गांधी ने ठीक ही कहा कि था आज राजनीति में आने के चार रास्ते हैं। पहला रास्ता-पावर व पैसा हो, दूसरा रास्ता-राजनेताओं की रिश्तेदारी हो, तो पार्टी में आसानी से आ सकते हैं (मैं खुद उसका उदाहरण हूं)। तीसरा-राजनीति में दोस्ती या जान-पहचान हो, चौथा रास्ता हैं- आम आदमी की आवाज बनकर राजनीति में आना, आज यह नहीं होता।

यह स्थितियां गहलोत के नेतृत्व में किसी कमी के फलस्वरूप नहीं आई है। वर्ष 2003 में अटल बिहारी वाजपेयी ने चुनावों से पूर्व कास्ट कार्ड खेला, हाईकमान संभाल नहीं सकी। बेहतरीन अकाल प्रबंधन व नगरीय विकास के बावजूद, कर्मचारी आंदोलन व सभी विधानसभा सदस्यों को पुनः टिकट देने का दबाव, संगठन में दरार व निष्क्रियता हार का मुख्य कारण रही थी। वर्ष 2013 में जनता, अशोक गहलोत की नीतियों व घोषणाओं से कांग्रेस को वोट देना चाहती थी, देशव्यापी प्रशंसनीय योजनाएं एवं विकास के बावजूद केन्द्रीय स्तर पर संगठन व सरकार की नीतियों, महंगाई, भ्रष्टाचार के आरोपों व मोदी लहर के कारण कांग्रेस की हार हुई। केन्द्रीय स्तर पर यह भी ध्यान नहीं रखा गया कि चुनाव के दो दिन पहले पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में वृद्धि नहीं की जानी चाहिए। वर्ष 2018 में जनमानस बीजेपी को हराने को तैयार था और 150 से ऊपर सीटों पर कांग्रेस की विजय की संभावना थी। परंतु पार्टी संगठन में खेमेबाजी व गलत टिकट वितरण के कारण वह केवल 99 का आंकड़ा छू पाई। अब चर्चा संगठन व सरकार की मजबूती पर की जा रही है, परंतु प्राथमिक बिन्दुओं को दरगुजर किया जा रहा है। अशोक गहलोत के अलावा राजस्थान कांग्रेस के पास ऐसा कोई नेता नहीं है जिसे पार्टी के भीतर एक सर्वमान्य नेता के रूप में स्वीकार किया जा सके।

युवा नेतृत्व के बहाने संगठन में बड़ी संख्या में केवल वंश, जाति व सम्प्रदाय के आधार पर तवज्जो देने से पुराने संकल्पित व प्रभावशाली नेताओं को इनके साथ तालमेल बिठाने में दिक्कत हो रही है। जिसकी वजह से पार्टी के भीतर आपसी समन्वय का अभाव है। भाजपा के हिन्दुत्व के एजेंडे की काट के लिए पार्टी के पास कोई स्पष्ट नीति भी नहीं है। साफ्ट हिन्दुत्व की रणनीति जनता में छाप नहीं छोड़ पा रही है। दुष्प्रचार से कांग्रेस अल्पसंख्यकों की पार्टी कहलाती है, दूसरी ओर अल्पसंख्यक बंटे हुए हैं। दलित व पिछड़ा वर्ग के प्रति कांग्रेस ने सदैव प्रगतिशील नीति अपनाई है, उनका विकास हुआ है, परंतु वर्तमान में भाजपा उनको अपनी गिरफ्त में लेने में सफल हो रही है। कांग्रेस संगठन में भीतरी अनुशासन सख्ती से लागू नहीं हो पाया है। नेताओं के बीच आपसी बयानबाजी से पार्टी की छबि धूमिल हो रही है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

With Best Compliments

Manglam Arts

R. K. Rawat (Shyam)

Sukhadia Circle, Udaipur - 313004 INDIA Tel. : +91-294-2425157/58/59/60

E-mail: shyam@manglam.com, udaipur@manglam.com, Website: www.manglamarts.com

75वां स्वतंत्रता दिवस

#राजस्थान_सतर्क_है

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज
तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला
सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश के शुभ अवसर पर मूल कर्तव्यों को अंगीकृत कर हम सब सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ाएं।

सभी प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द, जय भारत
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

1 घर से बाहर निकलें तो हमेशा मास्क पहनें
2 आपस में दो गज की दूरी बनाए रखें
3 अपने हाथ साबुन से धोते रहें या सैनेटाइज़ करें
4 वैक्सीन जरूर लगवाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

क्षमा याचना का अनोखा पर्व है पर्यूषण

पर्व दो तरह के होते हैं - लोकोत्तर व लौकिक। लोकोत्तर पर्व अनंत ज्योतिर्मय आत्मा के दर्शन की प्रेरणा देते हैं, आत्मलीन बनने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। पर्यूषण एक लोकोत्तर पर्व है। पर्यूषण पर्व के आठ दिन आत्मा का उत्सव मनाने के दिन हैं। इसके अंतिम दिन को संवत्सरी कहा जाता है।

राजर्षि राजेन्द्र मुनि

संवत्सरी या पर्यूषण जैन धर्म का सर्वप्रमुख और सर्वश्रेष्ठ पर्व है। यह भारतीय पंचांग के अनुसार प्रतिवर्ष भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि(कभी-कभी चतुर्थी को भी) जप-तप के साथ मनाया जाता है। इसमें जैन साधक(साधु, साध्वी, श्रावक व श्राविका रूपी चार भाव तीर्थ) चार गति व चौरासी लाख जीव योनि के सभी सूक्ष्म-स्थूल जीवों से मनसा, वाचा, कर्मणा नि:शल्य होकर क्षमा-याचना करता है और सभी को अपनी ओर से क्षमा प्रदान करता है।

इसका शास्त्रीय सूत्र है -

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं ण केणई

अर्थात् मैं अपनी ओर से संसार के सभी जीवों को क्षमा करता हूं और वे सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव है, किसी के प्रति भी मेरा वैर भाव नहीं है।

संपूर्ण जैन समाज में इस पर्व को मनाया जाता है। श्वेतांबर इसे संवत्सरी के रूप में मनाते हैं और दिगंबर दशलक्षण पर्व के रूप में। पर्व दो तरह के होते हैं लौकिक और लोकोत्तर। लौकिक पर्व यानी आमोद-प्रमोद का दिन। यह पर्व केवल शारीरिक सुख-सुविधाओं तक सीमित होते हैं। लोकोत्तर पर्व, अनंत ज्योतिर्मय आत्मा के दर्शन की प्रेरणा प्रदान करते हैं। पर्यूषण पर्व लोकोत्तर पर्व हैं। ये आठ दिन आत्मा के उत्सव मनाने के दिन हैं, जिसके अंतिम दिन को संवत्सरी कहा जाता है।

आत्मा का प्रकाश अनंत सूर्यों से बढ़कर है। यह दिव्य प्रकाश प्रत्येक आत्मा में समाया हुआ है। लेकिन उस आत्मा के दिव्य प्रकाश पर सघन आवरण आ गए हैं। पर्यूषण पर्व का मुख्य एक ही उद्देश्य है आत्मा पर छाए कर्मों के आवरणों को विलीन करके अनंत ज्योति का साक्षात्कार करना। हमारा देश भौतिक दृष्टि से भले ही विकासशील देशों में शुमार किया जाता है, पर आध्यात्मिक दृष्टि से अति शांत है। पश्चिमी देशों में स्थिति इसके ठीक विपरीत है। वहां आध्यात्मिक ऊर्जावर्धक ऐसा कोई पर्व नहीं है, जिसमें वहां के निवासी प्राणीमात्र के प्रति अपना वैरभाव भूलकर परस्पर स्थायी शांति के साथ रह सकें। जैन धर्म में व्रत उपवास पर खासा जोर दिया जाता है। साधकों का अनशनपूर्वक किया गया ये विशुद्ध चिंतन अपने मानसिक

> आत्मा का प्रकाश अनंत सूर्यों से बढ़ कर है। यह दिव्य प्रकाश प्रत्येक आत्मा में समाया हुआ है। पर उस आत्मा के दिव्य प्रकाश पर सघन आवरण आ गए हैं। पर्यूषण पर्व का एक ही उद्देश्य है आत्मा पर छाए कर्मों के आवरणों को विलीन करके अनंत ज्योति का साक्षात्कार करना।

परमाणुओं द्वारा एक शुद्ध पर्यावरण की सृष्टि करता है। इससे शारीरिक स्तर पर उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदयरोग, अनिद्रा, तनाव व अवसाद आदि रोगों का भी उपचार होता है। निराहार उपवास करने से आत्मा संसार के बाह्य परिवेश से निकलकर अपने भीतर की अन्तर्यात्रा शुरू कर देती है। संसारी संबंधों और आकर्षणों से रहित होने से आत्मा कर्म पुद्गलों को आकर्षित नहीं करती। धीरे-धीरे आत्मा से कर्मों का विलय करके यह शाश्वत मोक्ष मंजिल की ओर अग्रसर होने का प्रयास करती है।

इस पर्व का इतिहास भारतीय संस्कृति या जैन आचार-पद्धति की मूलभावना अहिंसा से जुड़ा है। जैन काल गणना के अनुसार प्रत्येक उत्सर्पिणी काल के द्वितीय आरे(चक्र) के प्रारंभ में जब हर ओर अनार्य सभ्यता का प्रचार-प्रसार होता है और सब लोग तामसिक भोजन-मांस भक्षण के अभ्यासी होते हैं, तब प्रकृति यकायक सात्विक अंगड़ाई लेती है। उस समय सात सप्ताहों में बीच-बीच में पांच सप्ताह निरंतर विभिन्न गुणधर्म वाली धाराप्रवाह वर्षा होने से धरती की ऊष्मा शांत होकर, उसमें शीतलता व स्निग्धता उत्पन्न होती है। उस अद्भुत प्राकृतिक परिवर्तन को देखकर उस समय के लोग सामूहिक रूप से तय करते हैं कि अब प्रकृति हमें अहिंसक रूप से निर्वाह हेतु हर प्रकार की वस्तु दे रही है, इसलिए आज के बाद हम जीव हत्या नहीं करेंगे। उसी क्रांतिकारी इतिहास की स्मृति में यह पर्व मनाया जाता है। पारस्परिक क्षमापणा के अतिरिक्त इस पर्व के अन्य भी आवश्यक संदेश व सिद्धांत है। इस दिन बड़ी संख्या में जैन साधक निराहार रहकर उपवास या पौषध व्रत करते हैं। वर्षभर में किए गए दोष, पाप व अतिचारों की शुद्धि हेतु सायंकालीन प्रतिक्रमण करते हैं। महामंत्र नवकार का अखंड जाप करते हैं। आहार शुद्धि का संकल्प लेते हैं। जितना अधिक हो दान-पुण्य करते हैं। सामयिक, संवर, दान, तप और त्याग से इस पर्व की आराधना करते हैं। प्रमुख रूप से पर्यूषण के आठ दिनों में क्षमा भाव की आराधना की जाती है। इस तरह यह अनोखा पर्व स्वान्त: सुखाय के साथ-साथ सर्व जनहिताय का भी मंगल वरदान है। आज आवश्यकता यह है कि इस आध्यात्मिक पर्व को विश्वव्यापी आयाम दिया जाए।

WITH BEST COMPLIMENTS

Parmeshwar Agarwal
Director

PREM
MARBLES PVT. LTD.

ELEGANCE ENGRAVED ETERNAL

Marine Black Cherry Gold Marine Beige

NH 8, Amberi, Udaipur - 313004 Rajasthan, India
M : +91 8890473333 / 8003834567
Email : stone@premmarbles.com
Website : www.premmarbles.com

पितरों के प्रति श्रद्धा अर्पण ही श्राद्ध

मृत शरीर की आत्मा की सन्तुष्टि एवं शांति के लिए जो कर्म किया जाए, वही श्राद्ध है। भारत का सनातन धर्म पूर्ण सहिष्णु एवं विश्व कल्याणमय है। जिसमें इस लोक के साथ परलोक को भी महत्व दिया गया है। जिसके अनुसार वर्ष में एक सम्पूर्ण पक्ष (पन्द्रह दिन) पितरों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा प्रकट करने के लिए ही नियत किया गया है। इस वर्ष श्राद्ध पक्ष इसी माह भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा अर्थात् 19 सितम्बर से आरंभ हो रहा है। जिसे पितृ पक्ष भी कहा गया है।

पं. पवन रावरिया

जो मनुष्य श्रद्धा से श्राद्ध करता है वह पितरों सहित सम्पूर्ण संसार को प्रसन्न करता है। पितृकर्म से दीर्घायु यश, श्री कीर्ति एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य जीर्ण वस्त्र उतारकर नवीन वस्त्र धारण कर लेता है, उसी प्रकार जीवात्मा भी पुराने शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण कर लेती है। शरीर के मृत हो जाने पर भी आत्मा सदैव अमर रहती है, इसी कारण से मृत पूर्वजों के नाम से दान आदि करने पर उनकी आत्मा तृप्त होती है। श्राद्ध का संबंध पितृलोक से ही है। पितृलोक में ही पितरों का निवास माना गया है। पितर दो प्रकार के होते हैं नित्य और नैमित्तिक। ईश्वरीय विधान के अनुसार नित्य पितर ही नैमित्तिक पितरों तक श्राद्धान्न पहुंचाते हैं। शास्त्रों के अनुसार उन्हें तो मात्र तृप्ति का आभास होता है अर्थात् वे जिस योनि में पहुंचे होंगे, उस योनि में उन्हें तृप्त करने वाली जो भी स्वाभाविक वस्तुएं होंगी, श्राद्ध का फल उसी रूप में परिवर्तित होकर मृत प्राणी की तृप्ति का कारण होगा।

वाल्मीकि रामायण तुलसीकृत रामचरितमानस में भी राम द्वारा श्राद्ध क्रिया का वर्णन मिलता है। गया में श्राद्ध करने के पश्चात् भी श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करना उचित माना गया है। यदि आत्मा मुक्ति प्राप्त कर चुकी हो तो भी श्राद्धकर्ता को तो पुण्य प्राप्त होता है। श्राद्धकाल में ब्राह्मण भोजन

को महत्व दिया गया है। यदि यह संभव न हो तो कच्चा धान व दक्षिणा का भी उतना ही फल प्राप्त होगा। इसमें असमर्थ हो तो गायों को चारा डलवाया जा सकता है। यदि और कुछ भी संभव न हो तो श्रद्धा सहित पितरों का स्मरण कर उन्हें नमस्कार करना ही उनको तृप्त कर देगा और वे श्राद्धकर्ता को आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

शास्त्रों में मनुष्य के लिए देवऋण, ऋषिऋण तथा पितृऋण उतारना आवश्यक बताया गया है। पितृऋण से मुक्त न होने पर जीवन निरर्थक है। जीवित माता-पिता की सेवा करने पर भी कमी रह ही जाती है। उसी के लिए श्राद्ध करना सरल उपाय है। पुत्र को चाहिए कि वह अपने माता-पिता की मरण तिथि के मध्यान्हकाल में पुन: स्नान करके श्राद्ध करें। एक, तीन या पांच ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें। ब्रह्म पुराण के अनुसार आश्विन(क्वार) मास के कृष्ण पक्ष में यमराज सभी पितरों को स्वतंत्र कर देते हैं ताकि वे अपनी संतान द्वारा किए पिंडदान प्राप्ति के लिए पृथ्वी पर आ सकें। कर्म पुराण के अनुसार पितर अपने पूर्व गृह में यह जानने के लिए आते हैं कि उनके कुल के लोग उन्हें याद करते हैं या नहीं। वे श्राद्ध करने वालों को आशीर्वाद देते हैं और नहीं करने वालों को श्राप। हरिवंश पुराण में भीष्म, युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं - 'पितर ऋण धर्म चाहने वालों को धर्म, संतान चाहने वालों को संतान और पुष्टि चाहने वालों को पुष्टि भी प्रदान करते हैं।'

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दी बांसवाड़ा सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि.

दूरभाष: 02962–242973, 243784, फैक्स : 02962–241375
वेबसाइट: www.banswaraccb.com ई–मेल: ccb_banswara@ymail.com
प्रधान कार्यालय: कॉलेज रोड, बांसवाड़ा

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

प्रगति के बढ़ते आयाम

संग्रहित लाभ	जमाएं	ऋण व्यवसाय	कार्यशील पूंजी
504.55 लाख	33016.88 लाख	24755.25 लाख	64736.15 लाख

रिजर्व बैंक द्वारा जारी लाइसेंस धारक बैंक

सुरक्षित बचत एवं उत्पादकता

पूंजी पर्याप्तता अनुपात (CRAR) 12.57%

राज्य सरकार की भागीदारी से प्रायोजित बैंक

5 लाख तक की जमाएं डिपोजिट इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन द्वारा बीमित

पूर्ण कम्प्यूटरीकृत बैंक

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

कर्नाटक का कश्मीर-कूर्ग

घूमने-फिरने के शौकीन लोग नई-नई जगह खोजते रहते हैं, जहां जाकर वे प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए छुट्टियों का आनंद ले सकें। कर्नाटक में कूर्ग ऐसा ही एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है, जिसे 'कर्नाटक का कश्मीर' भी कह सकते हैं। शांत और स्वच्छ वातावरण कूर्ग की पहचान है। ब्रह्मगिरी पहाड़ियों से घिरा कूर्ग चाय-कॉफी के बागानों से घिरा है। वैसे तो यहां किसी भी मौसम में जाया जा सकता है, पर अक्टूबर से अप्रैल वाले मौसम में यहां ज्यादा सैलानी आते हैं। रिवर राफ्टिंग, गोल्फ और ट्रेकिंग का भी यहां पूरा मजा लिया जा सकता है।

नीतू गुप्ता

कूर्ग कर्नाटक का प्रसिद्ध हिल स्टेशन है। जो हवाई, रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। वायुयान द्वारा इसके नजदीकी हवाई अड्डे मैंगलोर तक जा सकते हैं या बैंगलुरू तक भी जा सकते हैं। इसी तरह रेल और सड़क मार्ग द्वारा मैसूर तक जा सकते हैं। आगे टैक्सी से कूर्ग पहुंचा जाता है।

राजा की सीट

कूर्ग का यह एक खूबसूरत पार्क है जो राजा कोडगु के नाम पर रखा गया है। इसकी विशेषता है यहां का सूर्योदय और सूर्यास्त देखने का अवसर। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय यहां पर्यटकों का तांता लगा रहता है। पहाड़ियों के बीच की घाटियों में उठते कोहरे की लहरों को देखने का मजा ही निराला है। राजा कोडगु भी सूर्यास्त को इसी स्थान पर निहारते थे। इस गार्डन में विभिन्न प्रजातियों के मौसमी फूल खिलते हैं और कई खूबसूरत झरने हैं जो म्यूजिक से चलते हैं और देखने में बेहद सुंदर लगते हैं। यहां से शहर का शानदार नजारा भी दिखाई देता है।

ताल कावेरी

बह्मकगरी पहाड़ियों से कावेरी नदी झरने की तरह बहती है जो देखने में अति उत्तम लगती है। उसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। ताल कावेरी पर रिवर राफ्टिंग का आनंद भी लिया जा सकता है। कावेरी के सम्मान में यहां हर साल 17 अक्टूबर में कावेरी संक्रमण का त्योहार मनाया जाता है। मंदिर के प्रांगण में सीढ़ियां हैं जो ऊंची पहाड़ी तक ले जाती हैं। वहां से कूर्ग का सुंदर नजारा देखा जा सकता है।

कॉफी बागान

यहां काफी के बागान खूब है। कूर्ग काफी बागानों की सुंदरता के लिए जाना जाता है। प्रकृति की इस अनुपम सुंदरता को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं और उन्हें प्रकृति के नजदीक होने का अहसास मिलता है।

मदिकेरी किला

इस किले का निर्माण मधुराजा ने 17वीं शताब्दी में कराया था। उस समय इस किले को मिट्टी से बनाया गया था। बाद में टीपू सुल्तान ने पत्थरों से इसका निर्माण कराया।

एबी वाटर फॉल्स

कूर्ग में आने वाले पर्यटक इस स्थल को अवश्य देखने जाते हैं। यह मदिकेरी शहर से 8 किमी दूर एक काफी एस्टेट के अंदर है। एस्टेट में काफी, काली मिर्च, इलायची और कई अन्य पेड़-पौधे दिखाई देते हैं। एबीवाटर फॉल्स के ठीक सामने हैंगिंग ब्रिज है। इस पर खड़े हो जाएं तो झरने से उड़ते पानी के छींटे आपको गीला कर देते हैं। अंग्रेजों ने इसे कूर्ग नाम दिया था पर अब इसे बदल कर कोडगु कर दिया गया है। यहां की भाषा कुर्गी है। कॉफी, काली मिर्च, इलायची और शहद यहां से खरीदा जा सकता है। संतरों के मौसम में यहां के संतरे बहुत अच्छे लगते हैं। यहां के अधिकतर लोग मांसाहारी हैं। महिलाएं अलग अंदाज में साड़ी पहनती हैं जिसमें वह काफी सुंदर दिखाई देती हैं। स्थानीय लोग गोरे और अच्छे स्वभाव के हैं।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाश साहू
डायरेक्टर

9001810170
9829803995

CHARAK
MISTHAN

Sweets
Namkeen
Bakery

337, मल्लाहतलाई चौराहा, उदयपुर (राज.)

लालू यादव ने उड़ाई नेताओं की नींद

गोपाल जाट

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव पिछले कई दिनों से राष्ट्रीय राजनीति में फिर से सक्रिय होते दिखाई दे रहे हैं। चारा घोटाले मामले में जमानत पर छूटने के बाद उनका पुराने राजनेताओं से मिलना-जुलना हो रहा है। हालांकि, यह कहना अभी जल्दबाजी होगा कि किस रणनीति से मिल रहे हैं या फिर मिलने का मकसद सिर्फ हालचाल जानना ही है। लालू यादव बीते दिनों शरद यादव और मुलायम सिंह यादव से भी मिले हैं। हालांकि, दोनों नेताओं का आज के राजनीतिक दौर में कोई ज्यादा संदर्भ बचा नहीं है। इसके बावजूद लालू यादव की सक्रियता के मायने तो हैं। मीडिया से बात करते हुए लालू पेगासस, राष्ट्रीय राजनीति और बिहार की राजनीति पर तो बोल रहे हैं लेकिन आश्चर्य यह है कि जो लालू अपने अंदाज के लिए जाने जाते थे और भाजपा, प्रधानमंत्री मोदी और आरएसएस पर अक्सर हमला बोलते थे, वे तेवर इस बार दिखाई नहीं दे रहे हैं।

'इंडिया शाइनिंग' के वक्त निभाया था अहम रोल

साल 2004 के 14वें लोकसभा चुनाव में भी भाजपा की 'इंडिया शाइनिंग' का नारा असफल रहा था और कांग्रेस सत्ता में लौटी थी। उस समय कांग्रेस की जीत को भाजपा के लिए जबरदस्त झटके के तौर पर देखा गया था, क्योंकि साल 1999 में जीत के बाद पहली बार भाजपा के वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने केन्द्र में पांच साल सरकार चलाने में सफलता हासिल की थी। भाजपा ने साल 1999 को लोकसभा चुनाव 'विदेशी सोनिया' बनाम 'स्वदेशी वाजपेयी' के नाम पर लड़ा था। वहीं, 2004 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 'शाइनिंग इंडिया' और 'फील गुड' का नारा दिया था। लेकिन चुनाव नतीजे आने पर कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। सोनिया गांधी द्वारा प्रधानमंत्री बनने से इंकार करने पर मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने। लालू प्रसाद यादव को बतौर पुरस्कार रेलमंत्री बनाया गया।

लालू की राजनीति के मायने

जानकारों का मानना है कि लालू यादव यूपीए-1 और यूपीए-2 के वक्त जिस तरह से विपक्षी दलों को एक साथ लाने में मददगार साबित हुए थे, वही राजनीतिक माहौल साल 2024 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले बनाने के प्रयास में लग गए हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि वे अपने मकसद में कितना कामयाब होंगे? क्योंकि उनके अपने गृह राज्य बिहार में उनकी पार्टी व परिवार के राजनैतिक अस्तित्व पर ही फिलहाल संकट है। हालांकि राजनीति और क्रिकेट के मैदान पर कभी भी कुछ भी हो सकता है।

मोदी पर मौन

गौरतलब है कि लालू यादव पेगासस और हाल ही में बिहार विधानसभा के चुनावों पर भी अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अपने बेटे तेजस्वी यादव और नीतीश कुमार पर भी उन्होंने बोला है, लेकिन ताज्जुब की बात यह है कि लालू प्रसाद अपने जिस अंदाज के लिए जाने जाते हैं वह अंदाज अभी तक दिखाई नहीं दिया है। 2014 से पहले तक वह मोदी पर जमकर बोलते थे। आरएसएस और बीजेपी पर भी खूब चुटकी लेते थे, लेकिन वह अब तक न तो मोदी और न आरएसएस के बारे में कुछ बोले हैं।

मकसद में कितना कामयाब होंगे?

लालू यादव की सक्रियता से लगता है कि वह अपने दौर के पुराने नेताओं से सिर्फ कुशलक्षेम जान रहे हैं। पिछले दिनों लालू यादव ने शरद

यादव से मुलाकात के बाद मीडिया को बताया- 'शरद यादव जी की तबीयत के बारे में जानने के लिए आया था। शरद भाई पिछले काफी दिनों से बीमार चल रहे हैं। उनके जैसे नेताओं के बिना संसद सूनी है। शरद भाई, मुलायम सिंह यादव जी और खुद मैंने कई मुद्दों पर एक साथ लड़ाई लड़ी है। मुलायम सिंह यादव जी से भी मैंने शिष्टाचार भेंट की है।' उनका यह बयान भले ही राजनैतिक पत्ते नहीं खोलता, लेकिन साफ है कि वे सोनिया गांधी के विपक्ष की एकता के प्रयास में सार्थक भूमिका निभाना चाहते हैं। इसमें वे कितने कामयाब होंगे, समय ही तय करेगा।

तेजतर्रार नेता

लालू यादव बहुत तेज तर्रार नेता हैं। उन्होंने पहले जो गलती की थी, उसको अब दोहराना नहीं चाहते हैं। एक तो इसका कारण उनका स्वास्थ्य है और दूसरा वक्त। लालू यादव वक्त के हिसाब से लहजा बदलते रहते हैं। अपने गृहराज्य बिहार में मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से लेकर प्र.म. मोदी तक लालूजी के निशाने पर रहे हैं। वे चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा पर निशाना साधते हुए यह कहने से नहीं चूकते थे कि भाजपा को बिहार से भगाएंगे। मोदी को लेकर भी तरह-तरह का तंज कसा करते थे, लेकिन मौजूदा राजनीतिक परिस्थिति में वह फूंक-फूंक कर कदम रख रहे हैं। उनका स्वास्थ्य अगर ठीक रहा तो वह जबरदस्त तरीके से पलटवार कर सकते हैं। अस्वस्थता के बावजूद लालू की सियासी दांव-पेंच की रणनीति ने कई नेताओं की नींद उड़ा रखी है। राजनीति में फिर से उनकी दिलचस्पी का असर बिहार में भी दिखाई देने लगा है। इसी खतरे को भांपते हुए बिहार के कद्दावर भाजपा नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी ने लालू यादव की जमानत रद्द करने की बात उठाई है।

कैसा लगा यह अंक

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

pankajkumarsharma2013@gmail.com

श्रेष्ठ नागरिक तैयार करे, वही शिक्षक

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन : जिनके जन्म दिवस (5 सितम्बर) को देश शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। शिक्षकों व छात्रों को उनका संदेश

आप भाग्यशाली हैं कि स्वतंत्र भारत में रह रहे हैं, जिसे अपने विकास के लिए हर उस सक्षम नागरिक की जरूरत है, जो इस देश की सेवा बिना किसी व्यक्तिगत लोभ-लालच से कर सके। मैं जानता हूं कि यह कहना बहुत आसान है कि कर्म ही पुरस्कार है, मगर जो परिश्रम करते हैं, उन्हें इतना जरूर मिलना चाहिए कि वे व्यवस्थित रूप से जीवन यापन कर सकें। और अगर उनका काम संतोषप्रद है, तो उन्हें आरामदेह जीवन मिलना ही चाहिए। हमारी सरकारों(केन्द्र व प्रांतीय) को ऐसी प्रकियाएं जल्दी आरंभ करनी चाहिए कि सभी प्रतिभाओं को रोजगार मिल सके। अगर हम अपने शिक्षित युवा को रोजगार देने में विफल रहे, तो वे अपना संतुलन खो सकते हैं, उनका विश्वास मौजूदा अर्थव्यवस्था से उठ सकता है।

पूर्ण रोजगार व सामाजिक सुरक्षा आज के लोकतंत्र की असली महक है। कलिंग के शिलालेख में अशोक ने लिखा भी है, 'पूरी प्रजा मेरी संतान है। मैं अपनी संतान के लिए जिस तरह इहलोक व परलोक में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की कामना करता हूं, उसी प्रकार मैं अपनी समस्त प्रजा के लिए यही कामना रखता हूं।' कोई भी शिक्षक अपने छात्रों को तब तक प्रोत्साहित नहीं कर सकता या उनका सम्मान नहीं पा सकता, जब तक कि वह

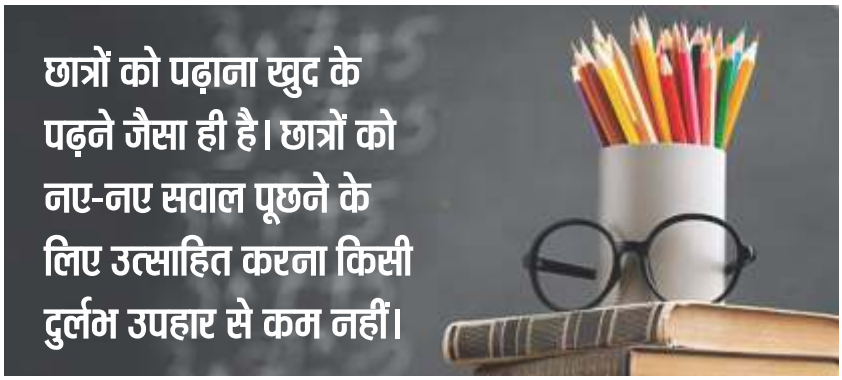

खुद ज्ञान की सीमाओं का विस्तार करने में रूचि नहीं रखता। छात्रों को पढ़ाना खुद के पढ़ने जैसा ही है। छात्रों को नए-नए सवाल पूछने के लिए उत्साहित करना किसी दुर्लभ उपहार से कम नहीं। एक विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा ऐसे शिक्षकों से ही होती है। सरकारों को ऐसे उपायों पर विचार करते रहना चाहिए, जिनसे विश्वविद्यालयों की स्थिति बेहतर बन सके। ऐसे शिक्षकों के प्रोत्साहन पर कतई विचार नहीं होना चाहिए, जो अध्यापन पर ध्यान नहीं देते और अपने छात्रों में बौद्धिकता व नैतिकता के विकास को लेकर उदासीन रहते हैं। अकादमिक रुझान से दूर केवल विश्वविद्यालय प्रशासन में सत्ता और रसूख पाने की कामना रखने वाले शिक्षक गुटबाजी व तरह-तरह के षड्यंत्र रचते रहते हैं। गुटबाजी हमारे सार्वजनिक जीवन में एक अभिशाप की तरह है। इसलिए अतिरिक्त सावधानी के साथ कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों का चयन होना चाहिए। और एक बार जब उन्हें नियुक्त कर लिया जाए, तो फिर उनकी गरिमा और सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जाना चाहिए। हम विश्वविद्यालयों से भी यह उम्मीद करते हैं कि वे ऐसे नागरिक तैयार करें, जो घृणा, द्वेष, आलस्य, अविश्वास और वर्चस्व की भावना से दूर हों। ये बुराइयां हमारी राष्ट्रीय ताकत को कमजोर बनाती हैं और हमारे कुछ नेता इन्हें आमतौर पर बढ़ाने का ही काम करते हैं। हम अपने देश को वास्तविक लोकतंत्र बनाने का प्रयास करना चाहिए, बिल्कुल एक बड़े परिवार की तरह, जिसके हर सदस्य का व्यक्तित्व बेशक अलग-अलग हो, मगर उनका दिल एक हो।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.

(Retail Revolution)

शुद्धता | विश्वसनीयता | गुणवत्ता

उदयपुर भण्डार को सहकारी क्षेत्र में उत्तरी भारत के सर्वश्रेष्ठ भण्डार का गौरव प्राप्त है

सुपरमार्केट की नियमित स्कीम

1 किलो शक्कर आधी कीमत पर **Rs. 1500** की खरीद पर

या

1 किलो शक्कर मुफ्त **Rs. 2500** की खरीद पर

या

1 लीटर खाद्य तेल मुफ्त **Rs. 3500** की खरीद पर

समस्त उत्पाद (M.R.P.) से कम दरों पर, 5 प्रतिशत की छूट

समस्त नहाने के साबुन/कपड़े धोने के साबुन /समस्त डिसवॉश बार/बिस्किट पर

510

रु. जमा करा कर भण्डार के सदस्य बनकर 1 प्रतिशत छूट एवं अनेक स्कीम का लाभ उठाएं

101

रु. का सामान प्रतिमाह जीवनभर मुफ्त

(10 हजार जमा योजना अंतर्गत भण्डार में 10 हजार से 80 हजार तक जमा कराते हुए 101 से 808 रू. तक का सामान प्रतिमाह मुफ्त पाएं)

www.thokbhandar.com वेबसाइट पर ऑनलाईन शॉपिंग सुविधा उपलब्ध है।

राज्य सरकार द्वारा हिस्सा राशि 500 रू. करने से जिन सदस्यों की हिस्सा राशि 100 रू. जमा है वे 400 रू. और जमा कर हिस्सा राशि पूर्ण करें। (शर्तें लागू)

अश्विनी कुमार वशिष्ठ
प्रशासक

आशुतोष भट्ट
महाप्रबंधक

ज्वेलरी के नाम पर ठगी नहीं रही आसान, अनिवार्य हुआ 'हॉलमार्क'

नम्बर दो से स्वर्णाभूषण की बिक्री पर भी लगेगा ब्रेक

हर 'जेवर' का भी 'आधार'

नितेश सर्राफ

ज्वेलरी के नाम पर ग्राहकों को ठगना अब आसान नहीं होगा। एक जून 2021 से हॉलमार्क की अनिवार्यता शुरू कर दी गई है। अब हर ज्वेलरी का यूनिक आइडेंटिफिकेशन कोड यानि विशेष पहचान नम्बर अलॉट हो रहा है। जिसे भारतीय मानक ब्यूरो के विशेष सॉफ्टवेयर में डालकर ज्वेलरी की असलियत सेकेंडों में परखी जा सकेगी। कारोबारियों के लिए इस सॉफ्टवेयर का ट्रेनिंग शेड्यूल जारी हो गया है। जिसकी शुरूआत दक्षिण भारत से की गई। उत्तर भारत में इसका प्रशिक्षण हो चुका है। बड़ी संख्या में ऐसे व्यापारी हैं जो 50 फीसदी सोने से बनी ज्वैलरी को भी खरा बताकर बेच रहे हैं। इसका खुलासा तब होता है, जब ग्राहक उसे बेचने जाता है। भारतीय मानक ब्यूरो के प्रमुख और सीनियर साइंटिस्ट राजीव पी. ने इस संबंध में सराफा कारोबारियों को पूरा शेड्यूल जारी किया। इसमें साफ कहा गया है कि एक हॉलमार्क अनिवार्य है। सोने की खरीद-फरोख्त से जुड़े हर सराफा व्यापारी पर नए नियम लागू हो गए हैं। सभी को हॉलमार्क ज्वैलरी ही बेचनी हैं। हॉलमार्क ज्वैलरी केवल 14, 18 और 22 कैरेट की ही बनेगी। इससे इतर अन्य सभी कैरेट की ज्वैलरी अवैध मानी जाएगी। सराफा कारोबारियों का अब ऑनलाइन पंजीकरण भी आवश्यक है।

बिना मान्यता के ठप्पा: स्वर्णाभूषणों की बिक्री के लिए हॉलमार्किंग अनिवार्य होने के बाद राजस्थान में पहली बार 23 और 24 जून को भारतीय मानक ब्यूरो की जयपुर शाखा ने मेसर्स राधाकृष्णा हॉलमार्क सेंटर एण्ड रिफाइनरी (चौड़ा रास्ता) पर सर्च और सीजर की कार्रवाई की। बीआइएस के अधिकारियों का कहना है कि इस फर्म के पास हॉलमार्क करने के लिए मान्यता नहीं होने के बावजूद अवैध रूप से हॉलमार्किंग की जा रही थी। बीआइएस के अनुसार मैसर्स राधा कृष्णा हॉलमार्क सेंटर से हॉलमार्क किया हुआ सेम्पल लिया गया, जो अवैध पाया गया। इसके बाद लेजर मार्किंग मशीन एवं कम्प्यूटर को सीज कर दिया गया। विभाग इस फर्म पर सेक्शन 29 के तहत कानूनी काग्रवाई कर रहा है। इस संबंध में चौमूं में भी एक फर्म पर कार्रवाई हुई है, जिसने बिना लाइसेंस लिए ही स्टैम्प लगाना शुरू कर दिया था। राजस्थान के 17 जिलों में 48 सेंटर हैं। इनमें से 12 सेंटर जयपुर में है।

एक तीर से कई निशाने

एक-एक ज्वेलरी का विशिष्ट पहचान कोड होने से एक तीर से कई निशाने साधे गए हैं। एक तो ग्राहकों के साथ फ्रॉड नहीं हो सकेगा। दूसरा-दुकान में रखी एक-एक ज्वेलरी कागजों में आ जाएगी। उदाहरण के लिए अगर व्यापारी ने ग्राहक को 50 अंगूठियां दिखाई तो सभी का यूनिक आईडी कोड होगा। उसमें से कोई एक या दो अंगूठी ही ग्राहक खरीदेगा, लेकिन बीआईएस के सॉफ्टवेयर पर ब्यौरा सभी 50 अंगूठियों का होगा यानी कितनी ज्वैलरी बेची जा रही है और कौन खरीद रहा है, इसका पूरा डाटा एक क्लिक में सरकार के पास होगा।

हर ज्वेलरी पर नंबर

भारतीय मानक ब्यूरो के मुताबिक ज्वेलरी पर यूनिक पहचान नंबर कोड होगा। बीआईएस सॉफ्टवेयर में इसका ब्यौरा दर्ज होगा। भुगतान लेने से पहले ज्वेलरी का यूनिक पहचान नम्बर सॉफ्टवेयर में फीड कर ग्राहक को दिखाया जाएगा। तस्दीक के बाद ग्राहक भुगतान करेगा। हॉलमार्किंग के नाम पर ज्यादा पैसा ग्राहकों से न लिया जा सके, इसकी व्यवस्था भी की गई है। सोने की एक ज्वेलरी की हॉलमार्किंग के लिए 35 रुपए प्रति नग का शुल्क तय किया गया है। चांदी की ज्वेलरी पर 25 रुपए प्रति नग शुल्क देना होगा।

> पहली बार हर ज्वेलरी को विशिष्ट पहचान कोड अलॉट किया जाएगा। इससे बाजार में पारदर्शिता आएगी और ग्राहकों का भरोसा बढ़ेगा। ठगी करने वाला सराफा व्यापारी खुद-ब-खुद बाजार से बाहर हो जाएंगे।
>
> **पंकज अरोड़ा,** नेशनल सेक्रेट्री, ऑल इंडिया ज्वेलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन

> एक-एक ज्वेलरी का यूनिक आईडी नम्बर होने से ग्राहक को फायदा होगा और उसे पूरी कीमत मिलेगी। झूठे वादों की कलई खुल जाएगी। कैरेट के नाम पर ग्राहकों का संशय दूर होगा। तत्काल असली-नकली की पहचान होगी।
>
> **महेश चन्द्र जैन,** अध्यक्ष यूपी सराफा एसोसिएशन

JK Cement LTD.
JKcement
JK SUPER CEMENT
BUILD SAFE
की ओर से
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

PRINCE
PIPING SYSTEMS
ZERO DEFECT
SINCE 1975
Sintex
WATER STORAGE TANKS
TATA PIPES
FLOW OF LIFE
PRAKASH
SURYA
STEEL TUBES & PIPES
Parryware
always in fashion
>99% EFFECTIVE
BUSINESS ENQUIRY SOLICITED
Distributor : BHARTI SANITATION
555/40, Bharti Bhawan, Near Samsung Service Centre, Police Line, Tekri Road, Udaipur (Raj.)
Phone: 0294-2483957, Mobile: +91-9414156831, +91-9829049948, E-mail: bhartisanitation@yahoo.in

ओलम्पिक मैदान पर भारत का सुनहरा सवेरा

देश के लाडले नीरज चौपड़ा ने ओलम्पिक में एक सदी से ज़्यादा का इन्तज़ार आखिर खत्म कर दिया। उन्होंने भाला फेंक में स्वर्ण जीतने के साथ एक समय असंभव सा लगने वाला चमत्कार कर अपना नाम खेल की दुनिया में स्वर्णाक्षरों से अंकित कर भारत की खुशियों को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया। इनसे पहले एथलेटिक्स में किसी भारतीय ने कोई भी पदक नहीं जीता। महान मिल्खा सिंह और पीटी उषा ओलम्पिक में पदक के एकदम करीब पहुंचकर भी चूक गए थे .....

अभिजय शर्मा

01 स्वर्ण सहित सात पदक जीतकर अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

01 स्वर्ण **02** रजत **04** कांस्य

नीरज चोपड़ा (स्वर्ण पदक)

टोक्यो ओलंपिक के सफल समापन के बाद भारतीय ओलंपिक दल के स्वदेश लौटने पर उनका भव्य स्वागत हो रहा है। देखा जाए तो यह ओलंपिक भारत के लिए कई मायने में अद्भुत रहा। इसमें भारत ने अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इस बार हमें एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक मिले। टोक्यो ओलंपिक भारत में खेल संस्कृति के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। नीरज चोपड़ा के रूप में एथलेटिक्स में पहली बार भारत का कोई खिलाड़ी स्वर्ण पदक जीता है। नीरज की सफलता स्वर्णिम है, लेकिन उनकी ऐतिहासिक सफलता के साथ यह न भूलें कि हॉकी ने भी अपना पुराना गौरव हासिल कर लिया है। पुरुष हॉकी टीम के कांस्य पदक जीतते ही हर देशवासी का चेहरा खिल गया। स्टार एथलीट नीरज चोपड़ा ने 7 अगस्त को जैवलिन के जादू से स्वर्ण पदक अपने नाम करके भारत को ओलम्पिक ट्रेक एवं फील्ड प्रतियोगिताओं में अब तक का पहला पदक दिलाकर नया इतिहास रचा। हरियाणा के खंडरा गांव के किसान के बेटे 23 वर्षीय नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 87.58 मीटर भाला फेंककर दुनिया को स्तब्ध कर दिया और भारतीयों को जश्न में डुबा दिया। एथलेटिक्स में पिछले 100 वर्षों से अधिक समय में भारत का यह पहला ओलंपिक पदक है। वह 2016 जूनियर विश्व चैंपियनशिप में रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीतने के बाद से लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

दबाव में नहीं दिखा रॉकस्टार

चोपड़ा शुरू से ही आत्मविश्वास से भरे हुए थे और किसी भी समय दबाव में नहीं दिखे। वह एक रॉकस्टार की तरह मैदान पर आए और भारत के लिए अभी तक का सर्वश्रेष्ठ ओलंपिक बना गए।

बिंद्रा के बाद दूसरे भारतीय : नीरज व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाले दूसरे भारतीय खिलाड़ी हैं। इससे पहले निशानेबाज अभिनव बिंद्रा ने बीजिंग ओलम्पिक 2008 में पुरुषों की 10मी. एयरराइफल में स्वर्ण जीता था। भारत की जीत का सफर नीरज के गोल्ड के साथ पूरा हुआ। इससे पहले भारत ने भारोत्तोलक मीरा बाई चानू के रजत पदक से जीत के सफर की शानदार शुरुआत की। भारत को टोक्यो ओलम्पिक में कुल 7 पदक मिले। जिनमें एक स्वर्ण, दो रजत व चार कांस्य पदक हैं। राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, खेलमंत्री किरण रिजीजू, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर सहित देश के बड़े नेताओं व नामी खिलाड़ियों ने भारत की उपलब्धि पर खिलाड़ियों, टीम व उनके कोच को बधाई दी है। इस जीत पर पूरा देश धूम-धड़ाके के साथ झूम उठा।

यह अविश्वसनीय लग रहा है, विश्वास नहीं हो रहा। पहली बार है जब भारत ने एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीता है इसलिए मैं बहुत खुश हूं। हमारे पास अन्य खेलों में ओलंपिक का एक ही स्वर्ण है। एथलेटिक्स में यह हमारा पहला ओलंपिक पदक है। यह मेरे और देश के लिए गर्व का क्षण है। क्वालिफिकेशन राउंड में मैंने काफी अच्छा थो फेंका था इसलिए मैं जानता था कि मैं फाइनल में बेहतर कर सकता हूं। लेकिन मैं नहीं जानता कि यह स्वर्ण होगा, मैं बहुत खुश हूं। – नीरज चोपड़ा

नीरज को पुरस्कार

- हरियाणा सरकार द्वारा 6 करोड़ रुपए
- पंजाब सरकार द्वारा 2 करोड़
- रेलवे ने 3 करोड़ और मणिपुर सरकार द्वारा एक करोड़ रुपए
- बीसीसीआई ने 1 करोड़ की घोषणा की है।
- आईपीएल फ्रेंचाइजी चेन्नई सुपर किंग्स ने 1 करोड़ रुपए
- महिन्द्रा समूह के चेयरमैन आनंद महिन्द्रा ने एक्सयूवी-700 देने की घोषणा की है।
- भारतीय ओलंपिक संघ भी 75 लाख रुपए प्रदान करेगा।

टोक्यो में इतिहास लिखा गया। नीरज चोपड़ा ने जो हासिल किया है उसे हमेशा याद रखा जाएगा। नीरज उल्लेखनीय जोश से खेले, अतुलनीय धैर्य दिखाया।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

लवलीना बोरगोहेन (कांस्य पदक)

असम की लवलीना ने अपने पहले ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वह विजेन्दर सिंह और मैरीकॉम के बाद मुक्केबाजी में पदक जीतने वाली तीसरी भारतीय खिलाड़ी है। तेईस साल की लवलीना का खेलों के साथ सफर असम के गोलाघाट जिले के बरो मुखिया गांव से शुरू हुआ जहां बचपन में वह 'किक-बॉक्सर' बनना चाहती थी। ओलंपिक की तैयारियों के लिए 52 दिनों के लिए यूरोप दौरे पर जाने से पहले वह कोरोना से संक्रमित हो गई।

बजरंग पूनिया (कांस्य पदक)

इन खेलों से पहले बजरंग को स्वर्ण पदक का सबसे बड़ा दावेदार माना जा रहा था। सेमी फाइनल में हार के बाद वह स्वर्ण पदक के सपने को पूरा नहीं सके लेकिन कांस्य पदक जीतकर उन्होंने देश का नाम ऊंचा जरूर किया। वह बचपन से ही कुश्ती को लेकर जुनूनी थे और आधी रात के बाद दो बजे ही उठ कर अखाड़े में पहुंच जाते थे। कुश्ती का जुनून ऐसा था कि 2008 में खुद 34 किलो के होते हुए 60 किलो के पहलवान से भिड़ गए।

मीराबाई चानू (रजत पदक)

मणिपुर की छोटे कद की इस खिलाड़ी ने टोक्यो 2021 में प्रतिस्पर्द्धा के पहले ही दिन 24 जुलाई को ही पदक तालिका में भारत का नाम अंकित करा दिया था। उन्होंने 49 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीतकर भारोत्तोलन में पदक के 21 साल के सूखे को खत्म किया। इस 26 साल की खिलाड़ी ने कुल 202 किग्रा का भार उठाकर रियो ओलंपिक(2016) में मिली निराशा को दूर किया। वह पहले तीरंदाज बनना चाहती थीं।

रवि दाहिया (रजत पदक)

हरियाणा के सोनीपत जिले के नाहरी गांव में जन्मे रवि ने पुरुषों के 57 किग्रा फ्रीस्टाइल कुश्ती में रजत पदक जीत कर अपनी ताकत और तकनीक का लोहा मनवाया। किसान परिवार में जन्मे रवि दहिया दिल्ली के छत्रसाल स्टेडियम में प्रशिक्षण लेते हैं जहां से पहले ही भारत को दो ओलंपिक पदक विजेता-सुशील कुमार और योगेश्वर दत्त-मिल चुके हैं। उनके पिता राकेश कुमार ने उन्हें 12 साल की उम्र में छत्रसाल स्टेडियम भेजा था।

पीवी सिंधू (कांस्य पदक)

सिंधू ने कांस्य पदक जीतकर किसी को निराश नहीं किया। इस 26 साल की खिलाड़ी ने इससे पहले 2016 रियो ओलम्पिक में रजत पदक जीता था। वह ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली देश की पहली महिला और कुल दूसरी खिलाड़ी हैं। तोक्यो में उनके प्रदर्शन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सेमीफाइनल में ताइ जू यिंग के खिलाफ दो गेम गंवाने से पहले उन्होंने एक भी गेम में हार का सामना नहीं किया था।

पुरुष हॉकी टीम (कांस्य पदक)

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने कांस्य पदक जीतकर इस खेल में 41 साल के सूखे को खत्म किया। यह पदक हालांकि स्वर्ण नहीं था लेकिन देश में हॉकी को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए काफी है। ग्रुप चरण के दूसरे मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 1-7 से बुरी तरह हारने के बाद मनप्रीत सिंह की अगुआई में टीम ने शानदार वापसी की। सेमीफाइनल में बेल्जियम से हारने के बाद टीम ने कांस्य पदक प्ले ऑफ में जर्मनी को 5-4 से मात दी। पूरे टूर्नामेंट के दौरान मनप्रीत की प्रेरणादायक कप्तानी के साथ गोलकीपर पीआर श्रीजेश ने शानदार प्रदर्शन किया।

वुमन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज शपथ समारोह

उदयपुर। उदयपुर वूमन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज का 8वां स्थापना दिवस एवं नवीन कार्यकारिणी का शपथ समारोह होटल रेडिसन ग्रीन में हुआ। मुख्य अतिथि अतिरिक्त आबकारी आयुक्त कविता पाठक एवं अर्चना ग्रुप के निदेशक सौरभ पालीवाल थे। चेम्बर की संरक्षिका माया कुम्भट ने विगत 8 वर्षों की सेवा यात्रा की जानकारी दी। इस अवसर पर पालीवाल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. नीता मेहता, सचिव टीना सोनी, कोषाध्यक्ष मीनू कुम्भट, निवर्तमान अध्यक्ष रीटा महाजन, सुरजीत छाबड़ा, डॉ. रीना राठौड़, नीलम कोठारी, कुमुद गहलोत, भावना कावड़िया को शपथ दिलाई। प्रारम्भ में निवर्तमान अध्यक्ष रीटा महाजन ने वर्ष 2019-20 के दौरान किये गये कार्यों की जानकारी दी। डॉ. ममता धुपिया ने सोविनियर का विमोचन करवाया।

ये महिलाएं हुई सम्मानित

अध्यक्ष नीता मेहता ने बताया कि समारोह में कोरोनाकाल के दौरान आर्थिक सहयोग करने वाली सदस्यों मीनू कुम्भठ, ज्योत्स्ना मिंडा, बेला, सुरजीत छाबड़ा, टीना सोनी, डॉ. रीना राठौड़, नीलम कोठारी, श्वेता चौधरी, डॉ. सीमा पारीख, रीटा महाजन, डॉ. नीता मेहता, दर्शना सिंघवी, श्वेता को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। बेस्ट प्रोजेक्ट के लिये ममता धुपिया सम्मानित हुई।

धवन की लक्ष्यराज सिंह से भेंट

उदयपुर। भारतीय क्रिकेट टीम के सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने उदयपुर क्रिकेट एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ से मुलाकात की। इस मुलाकात में क्रिकेट, पोस्ट कोविड चुनौतियों-संभावनाओं, मेडिटेशन, फिटनेस आदि मुद्दों पर मंथन हुआ।

डॉ. गुप्ता व डॉ. अग्रवाल का सम्मान

उदयपुर। रोटरी क्लब उदय की ओर से आई एमए उदयपुर शाखा के अध्यक्ष बनने पर डॉ. आनन्द गुप्ता व सचिव बनने पर डॉ. प्रशान्त अग्रवाल का सम्मान किया गया। क्लब अध्यक्ष दीपेश हेमनानी ने बताया कि क्लब की चार्टर अध्यक्ष शालिनी भटनागर व राघव भटनागर ने उन्हें सम्मानित किया।

सोनी अध्यक्ष, जैन व हुसैन सचिव

उदयपुर। यूआईटी कॉन्ट्रेक्टर एसोसिएशन की बैठक में नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें संरक्षक चन्द्र सिंह सामर व सिद्धार्थ शर्मा, अध्यक्ष प्रदीप सोनी, उपाध्यक्ष ख्यालीलाल पहाड़िया व हितेष शोभावत, सचिव जितेन्द्र जैन व फिरोज हुसैन, कोषाध्यक्ष गोपाल कोठारी को बनाया गया। इसके अलावा आठ जनों को कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किया गया।

वृद्धाश्रम पर वृक्षारोपण

उदयपुर। तारा संस्थान एवं जियो साइंटिस्ट्स सोसायटी ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय वृद्धाश्रम, बलीचा में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माइंस एण्ड जियोलॉजी के पूर्व अतिरिक्त निदेशक सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने की। तारा संस्थान की अध्यक्ष एवं संस्थापक कल्पना गोयल ने अतिथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। इस अवसर पर जियो साइंटिस्ट्स सोसायटी के पदाधिकारीगण ओंकारसिंह सिरोया, सुनील वशिष्ट, महेन्द्रकुमार सोमानी, बी.एस. यादव तथा डी.एस. मेहता, एन.एस. खमेसरा, एन.के. कावड़िया तथा अरुण मालू ने भी विचार प्रकट किए। वृक्षारोपण के अंतर्गत वृद्धाश्रम परिसर में नीम, पीपल गुलमोहर तथा कई अन्य तरह के वृक्षों को रोपा गया। मुख्य कार्यकारी दीपेश मित्तल ने संस्थान की गतिविधियों सेअवगत करवाया। धन्यवाद की रस्म निदेशक (जनसम्पर्क) विजयसिंह चौहान ने निभाई।

आरटीओ राठौड़ सम्मानित

उदयपुर। कोरोनाकाल में बेहतरीन सेवाएं देने पर उदयपुर के आरटीओ प्रकाशसिंह राठौड़ को जिलास्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्मानित किया गया। राठौड़ कोरोना में ट्रांसपोर्टरों की समस्याओं के समाधान में सक्रिय रहे।

डीटीओ कल्पना राज्य स्तर पर सम्मानित

उदयपुर। कोरोना काल में बेहतरीन सेवाएं देने पर जयपुर में आयोजित समारोह में उदयपुर की डीटीओ डॉ. कल्पना शर्मा को राज्य स्तर पर सम्मानित किया। श्रीमती शर्मा ने कोरोना काल में श्रमिकों को उनके गांव-घरों तक पहुंचाने में बड़ी मदद की थी।

with best compliments

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :
2nd Floor, 26-NB Complex, Ahmedabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

मच्छरजनित रोगों से बचाव ज़रूरी

डॉ. अनिता शर्मा

बारिश के बाद जगह-जगह सड़कों, गलियों, छतों पर रखे बर्तनों आदि में पानी भर जाता है। इस पानी में मच्छरों का लारवा जन्म लेता है। जल्द ही मच्छर पैदा होने लगते हैं। मच्छर के काटने से भयंकर बीमारियां होती हैं। कुछ मच्छर जनित बीमारियां ऐसी होती हैं, जिनके लक्षण जल्दी दिखाई नहीं देते, कुछ समय बाद दिखाई देते हैं। तब तक बीमारी अधिक बढ़ चुकी होती है। मच्छर दिखने में छोटा-सा होता है, लेकिन यह छोटा-सा जीव आपकी जान ले सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर साल लाखों लोगों की मौत मच्छर के काटने से होती है। मच्छर जनित बीमारियां संक्रमण से फैलती हैं। इनसे बचना और सावधानी बरतना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि कोरोना का संकट भी अभी समाप्त नहीं हुआ है, ऐसे में हमें दिनचर्या के पल-पल में सावधान रहना ही है, त्वचा सम्बन्धी रोग भी इस समय प्रभावी हो जाते हैं।

मलेरिया

मलेरिया खराब उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अधिक तेजी से फैल रहा है। इन क्षेत्रों में यह बच्चों और गर्भवती महिलाओं को अधिक प्रभावित कर रहा है। मलेरिया प्लाजमोडियम परजीवी द्वारा फैलता और एनोफिलेस मच्छर के कटाने से होता है। प्लाजमोडियम परजीवी लाल रक्त कोशिकाओं पर असर डालता है। मलेरिया होने पर बुखार, सिर दर्द और उल्टी जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। अगर समय रहते इसका इलाज नहीं कराया गया तो जानलेवा हो सकता है।

चिकनगुनिया

चिकनगुनिया एक विषाणुजनित बीमारी है, जो कि संक्रमित मच्छर के काटने से फैलता है। इसके कारण सिर दर्द, जोड़ों में दर्द और तेज बुखार की समस्या झेलनी पड़ती है। चिकनगुनिया इतना खतरनाक होता है कि जिसे यह होता है उसके शरीर में लम्बे समय तक दर्द बना रहता है। इस बीमारी का विशेष इलाज नहीं है। चिकनगुनिया से पीड़ित व्यक्ति को डॉक्टर व्यायाम और तरल पदार्थ लेने की सलाह देते हैं।

डेंगु बुखार

डेंगु बुखार वायरस के कारण फैलता है। यह मादा मच्छर एडीज के काटने से होता है। तेज बुखार, सिर दर्द, जोड़ों तथा हड्डियों में दर्द और नाक तथा मसूढ़ों से रक्तस्राव जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इसे हड्डी तोड़ बुखार भी कहते हैं।

जीका वायरस

जीका वायरस तेजी से फैलने वाला विषाणु है। यह संक्रमित एडीज मच्छर के काटने से होता है। इसके लक्षणों में हल्का बुखार, जोड़ों में दर्द, शरीर पर चकत्ते पड़ते दिखाई देते हैं। हालांकि इस वायरस की रुकावट के लिए कोई सार्थक टीका नहीं बना है। शुरुआत में यह दक्षिण अफ्रीका में अधिक फैला, अब धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल रहा है।

जापानी मस्तिष्कशोथ

जापानी मस्तिष्कशोथ का वायरस जलप्लावित चावल के खेतों, दलदल और पौधों के आसपास जमा पानी में पैदा होता है। यह वायरस तंत्रिका तंत्र, मस्तिष्क और मेरुरज्जु पर हमला करता है। इसे खत्म करने के लिए टीका बनाया गया है।

बचाव

पंखा चलाएं: मच्छरों को हवा से दिक्कत होती है। हवा के कारण वे किसी एक जगह रुक नहीं पाते। अतएव मच्छरों के काटने से बचने के लिए घर में पंखा या एयर कंडीशनर चालू करके रखें।

पानी जमा न होने दें: जिस जगह आप रहते हैं वहां आसपास पानी जमा न होने दें। पानी जमा होने से मच्छर पनपते हैं। बड़ी संख्या में मच्छर पैदा होते हैं और नुकसान पहुंचाते हैं। अगर कहीं पानी जमा है, तो उसमें मिट्टी का तेल डाल दें। इससे मच्छर पैदा नहीं होंगे और आप भी सुरक्षित रहेंगे।

कीटनाशकों का प्रयोग: मच्छरों को मारने का सबसे अच्छा तरीका कीटनाशकों का प्रयोग है। इन्हें उस जगह छिड़कना चाहिए जिस जगह मच्छर हों। इसके अलावा मच्छर को मारने वाली अगरबत्ती का भी प्रयोग किया जा सकता है।

पीने का पानी: पीने का पानी छान कर, उबाल कर और फिल्टर करके पीएं। साफ पानी पीने से बहुत-सी बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

लंबी बाजू वाले कपड़े: जब भी घर से बाहर निकलें तो लंबी बाजू या पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें।

हरिवंश राय बच्चनः अनछुए परिदृश्य

विष्णु शर्मा हितैषी

हरिवंश राय बच्चन के हिन्दी साहित्य में अवदान को लेकर अध्ययन के प्रति डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' की विद्यार्थी काल से ही गहरी रूचि रही है। बच्चन जी के व्यक्तित्व व कृतित्व को लेकर यह इनकी दूसरी कृति है। इससे पूर्व इन्होंने 80 के दशक में बच्चनजी की कविताओं के मर्म को लेकर प्रकाशित शोध पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। हालांकि सद्य प्रकाशित पुस्तक में बच्चन जी की कविताओं के जीवन के अनछुए पहलूओं पर भी रोशनी डाली गई है। हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर से प्रकाशित 'हरिवंश राय बच्चनः अनछुए परिदृश्य' (पृष्ठ संख्या 149) की प्रस्तावना (मेरी बात) में प्रख्यात साहित्यकार समालोचक डॉ. कृष्णकुमार शर्मा ने लिखा है' बच्चन जी पर आलोचकों ने काफी लिखा है, डॉ. भाटी की यह पुस्तक अलग है, बच चन जी के संदर्भ में अनछुए परिदृश्यों को खोलती है। पाठकों के सामने प्रश्न रखती है, समाधान भी और चुनौती भी, इसलिए अलग है। बच्चन जी के कवि व्यक्तित्व, बच्चन जी और उमर खैयाम, शोधकर्ता और अनुवादक के रूप में बच्चन आदि अनेक बिन्दुओं पर डॉ. भाटी ने लिखा है,

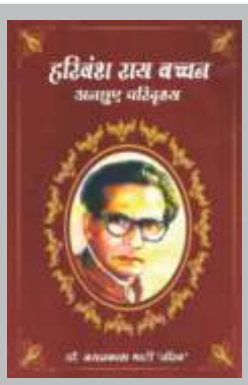

रचनाकार का प्राणवान व्यक्तित्व, चिंतनशीलता, प्रामाणिकता, विषय की पकड़ और दृष्टि स्पष्ट है। कृति को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो लेखक रू-ब-रू संवाद कर रहा है। डॉ. भाटी ने पुस्तक में स्थापित किया है कि बच्चन जी की रचनाएं अनुभूतियों तथा अभिव्यक्ति का सुंदर संगम है।

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' ने जिस प्रकार से बच्चन के काव्य की व्याख्या अपनी पुस्तक में की है, उससे लगता है जैसे उन्होंने बच्चन जी की आत्मा में प्रवेश कर उनके दुःख-दर्द और पीड़ा को जीया और भोगा है।

- डॉ. अंजना गुर्जरगौड़

यह पुस्तक उनके लम्बे अध्ययन का सुचिंतित परिणाम है।' लेखक अपनी पुस्तक के बारे में कहता है कि तुलसी ने जिस आस्था और विश्वास के साथ स्वयं को श्रीराम के चरणों में समर्पित किया था, उसी आस्था और विश्वास के साथ बच्चनजी ने खुद को कविता के हाथों सौंप दिया था। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि उन्होंने खुद कविता नहीं लिखी, बल्कि कविता ने उन्हें लिख दिया। गोस्वामी तुलसीदासजी ने जैसे हर कठिन क्षण में राम को पुकारा, उसी प्रकार हर आघात और चोट पर उन्होंने कविता को पुकारा। उन्होंने केवल कविता को ही नहीं वरन कवि का भी समाजीकरण किया था। बच्चन जी ने खुद कुछ नहीं लिखा, उनका जीवन जो कुछ उनसे लिखवाता गया, वे चुपचाप लिखते गए। उनकी कविताओं ने जितना गहरा स्थाई प्रभाव छोड़ा, शायद अज्ञेय जी को छोड़कर अन्य कोई कवि वैसा नहीं छोड़ पाया। डॉ. भाटी की भाषा शैली और शिल्प विधान इस पुस्तक की एक और विशेषता है उन्होंने बच्चनजी के वैयक्तिक क्षणों और घटनाओं को भी बड़े मनोयोग से उकेरा है। लेखक के साथ-साथ प्रकाशक हरीश आर्य भी हिन्दी साहित्य के भंडार में इस कृति से श्री वृद्धि के लिए साधुवाद के पात्र हैं। लेखक ने यह प्रकाशन पुष्प माता-पिता को समर्पित कर अपने पितृ ऋण से उऋण होने का ही संकेत किया है। गहन अध्ययन और परिश्रम से बच्चन जी को श्रद्धांजलि स्वरूप रचित इस पुस्तक के लिए कवि हृदय डॉ. नीरव को बहुत बधाई।

प्रेरक प्रसंग

संतोष व संवेदना

किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन में सफल होने के लिए जरूरी है कि वह संवेदनशील तो हो लेकिन असंतोषी प्रवृत्ति का न हो। संवेदनशीलता जहां मानवता का प्राथमिक लक्षण है, संतोषी और संयमी होकर व्यक्ति जीवन में बहुत से अनिष्ट से बच सकता हैं। वैसे यह सीख न तो नई और न ही अप्रासंगिक है। हर दौर में इस सीख की दरकार रही है और इसके बूते लोगों ने बड़ी कामयाबियां हासिल की हैं।

एक लोककथा बहुत प्रचलित है। एक खेत में कुछ मजदूर काम कर रहे थे। कुछ देर बाद वे काम छोड़ आपस में गप्पे हांकने लगे। यह देख खेत के मालिक ने उनसे कुछ कहे बिना

खुरपी उठाई और काम में जुट गया। मालिक को काम करता देख मजदूर शर्म के मारे तुरंत काम में जुट गए। दोपहर में मालिक मजदूरों के पास जाकर बोला, 'भाइयों! अब काम बंद कर दो। भोजन कर के आराम कर लो। बाकी काम बाद में होगा।' इसके बाद मजदूर खाना खाने चले गए और थोड़ा आराम करके वे शीघ्र ही काम पर लौट आए।

शाम को छुट्टी के समय पड़ोसी खेत वाले ने उस खेत के मालिक से पूछा, 'भाई! तुम मजदूरों को छुट्टी भी देते हो। उन्हें डांटते भी नहीं हो। फिर भी तुम्हारे खेत में मेरे खेत से दोगुना काम कैसे हो गया। जबकि मैं लगातार अपने मजदूरों पर नजर रखता हूं। डांटता भी हूं और छुट्टी भी नहीं देता।'

इस पर पहले खेत के मालिक ने कहा, 'भैया! मैं काम लेने में सख्ती से ज्यादा स्नेह और सहानुभूति को प्राथमिकता देता हूं। इसलिए मजदूर मन लगाकर काम करते हैं। इससे काम ज्यादा भी होता है और अच्छा भी।'

उचित दिशा में हरियाली

अनिता जैन

अगर अपने घर के भीतर और आसपास हरियाली देखना आपको पसंद है तो यह भी जान लीजिए कि किस दिशा में कौनसा पेड़ और पौधा घर-परिवार के लिए सुख-समृद्धि लाएगा और कौन से पौधे नुकसान देंगे।

हरियाली सबके मन को भाती है, सकारात्मक ऊर्जा देती है, शुद्ध ऑक्सीजन देकर पर्यावरण को भी संतुलित रखती है। इतना ही नहीं वास्तुदोष निवारण, बीमारियों को ठीक करने में और उत्तम स्वास्थ्य संरक्षण में वृक्ष-वनस्पतियों का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

साफ शब्दों में कहा जाए तो बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने के लिए वृक्षारोपण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, पेड़ लगाना हमारे लिए हर हाल में लाभकारी हैं। लेकिन वास्तु विज्ञान के अनुसार पेड़-पौधे घर या उसके आसपास यदि उपयुक्त दिशा में न हों तो ये शारीरिक, आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का कारण भी बन सकते हैं।

उत्तर-पूर्व हो हरा

वास्तु विज्ञान के अनुसार पौधों को दिशाओं के अनुरूप सही स्थान दिया जाए तो ये आश्चर्यजनक रूप से फायदा देते हैं। घर के बगीचे या बालकनी में उत्तर-पूर्व एवं पूर्व दिशा में छोटे पौधे जैसे तुलसी, केला, गेंदा, आंवला, लिली, हरीदूब, पुदीना, हल्दी आदि लगाने चाहिए। इन दिशाओं में छोटे पौधे होने से उगते हुए सूर्य की स्वास्थ्यवर्द्धक रश्मियां घर में प्रवेश कर सकेंगी। जिससे परिवार के सदस्यों की सेहत दुरुस्त रहेगी, सामाजिक रिश्ते मजबूत होंगे। अद्‌भुत औषधीय गुणों वाला तुलसी का पौधा नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करता है, वहीं यह अपने आस-पास के वातावरण को भी शुद्ध करता है, अत: इसे घर में अवश्य लगाना चाहिए।उत्तर दिशा में नीले रंग के फूल देने वाले पौधे जीवन में समृद्धि लाने में सहायक सिद्ध होंगे। नीला रंग व्यक्ति के जीवन में स्थिरता व पवित्रता लाता है।

कम घने और छोटे पौधे

ऊंचे पेड़ों को सदैव घर के दक्षिण या पश्चिम दिशा में लगाना उचित माना गया है। वास्तु सिद्धांत के अनुसार सकारात्मक ऊर्जा की तरंगे हमेशा पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण और पूर्वोत्तर(ईशान) से दक्षिण-पश्चिम कोण(नैऋत्य) की ओर बहती हैं। ऐसे में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उत्तर और पूर्व में कम घने और छोटे पौधे ही लगाए जाएं ताकि सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह में कोई अवरोध नहीं हो।

पीपल को घर से पर्याप्त दूरी पर या कहीं खुले स्थान में पश्चिम दिशा की तरफ लगाना शुभ परिणाम देता है। पीपल के पेड़ की खासियत यह मानी जाती है कि यह चौबीसा घंटे वातावरण में ऑक्सीजन ही छोड़ता है। वातावरण को शुद्ध करने वाला यह वृक्ष अनेक असाध्य रोगों में भी लाभकारी है। सफेद रंग के फूलों के पौधे जैसे - चांदनी, मोगरा, चमेली आदि को इस दिशा में लगाने से लाभ और प्राप्तियों के मौके ज्यादा होते हैं। इनसे घर के बच्चों में रचनात्मक शक्ति का विकास होता है।

सुख-सौभाग्य के लिए

अनार हृदय रोग, संग्रहणी, वमन में लाभकारी और शक्तिवर्द्धक है। इसके पेड़ को घर से बाहर दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा में लगाने से सुख-सौभाग्य में वृद्धि होगी।लाल रंग के फूल जीवन में ऊर्जा और उमंग भरते हैं। दक्षिण-पूर्व या दक्षिण दिशा में लगे हुए लाल फूल परिवार के लोगों को प्रसिद्धि व यश प्रदान करते हैं।

समृद्धि के लिए

मनीप्लांट, बांस और क्रिसमस ट्री वास्तु की दृष्टि में समृद्धि देने वाले माने जाते हैं। अशोक और बांस के पेड़ लगाने से घर में पॉजिटिव एनर्जी का संचार होता है, इसे लगाने से आपकी तरक्की होती है और घर में सुख-समृद्धि आती है। वहीं एंटी-बैक्टीरियल गुणों से भरपूर नीम का पेड़ दूषित वायुमंडल को शुद्ध कर के स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करता है। बीमारियों को दूर रखने वाले नीम के पेड़ को वायव्य कोण में लगाना सुखद परिणाम देगा।

सकारात्मकता 'बेल-वृक्ष'

भगवान शंकर को प्रिय बेल का वृक्ष घर की उत्तर-पश्चिम दिशा यानी वायव्य कोण में लगाना अत्यंत शुभ माना गया है। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के प्रांगण में बेल का पौधा होने से आप सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जाओं से बचे रहते हैं। वास्तुदोष दूर होकर घर में सुख-समृद्धि का वास होता है। घर की उत्तर-पश्चिम दिशा में लगा बेल का पौधा वहां रहने वाले हर सदस्य को यशस्वी और तेजवान बनाता है। साथ ही मान और प्रसिद्धि भी बढ़ती है।

Harish Arya
Director
Mob.: 94141-66102

Suresh Arya
Director
Mob.: 76659-45223

Sudhanshu Arya
Director
Mob.: 97728-85254

ARYAS PUBLISHERS DISTRIBUTORS (P) LTD.

SINCE 1973

APDPL

2-D, Hazareshwar Colony, Near Court Choraha
Udaipur (Raj.) - 313 001 Tel.: 0294-2421087, 93516-85460
E-mail: apdpl.2012@gmail.com
www.facebook.com/APDPL

राजस्थान में 'घर-घर औषधि' की महत्वाकांक्षी योजना

आर.के. जैन
वन संरक्षक
उदयपुर

कोरोना महामारी के इस कठिन दौर में आम व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर काफी सजग हुआ है। यहीं नहीं, इस दौरान प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति भी समाज में संवेदनशीलता बढ़ी है। कोरोना महामारी के दौरान आमजन ने अपनी दिनचर्या में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से हर्बल काढ़ा व योग को सम्मिलित किया है। इसी अवधि में तुलसी एवं गिलोय का बढ़ता हुआ उपयोग भी देखा गया है।

इसी परिप्रेक्ष्य में राजस्थान सरकार ने मुख्यमंत्री की बजट घोषणा 2021 से जड़ी-बूटियों के माध्यम से आमजन की स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु 'घर-घर औषधि योजना' प्रारंभ की है। इसके तहत प्रदेश के प्रत्येक परिवार को आगामी 5 वर्षों में तीन बार 8-8 औषधीय पौधे नि:शुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।

स्वस्थ राजस्थान-हरित राजस्थान की अवधारणा एवं आयुर्वेद के गहन अनुभव से औषधीय पौधों में तुलसी, गिलोय (अमृता), अश्वगंधा एवं कालमेघ का चयन किया गया है। इस अभिनव योजना के माध्यम से राज्य सरकार जनता को परम्परागत चिकित्सा के औषधीय पौधों के उपयोग, लाभ एवं रोपण तकनीक बताकर जनता को आयुर्वेद एवं प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान कर रही है।

योजना के तहत प्रत्येक वनमण्डल/जिले वार परिवारों की संख्या के अनुरूप 8 पौधे प्रत्येक परिवार के अनुसार पौध तैयारी के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। प्रथम वर्ष में 50 प्रतिशत परिवारों को व शेष 50 प्रतिशत परिवारों को अगले वर्ष पौधे प्रदान करने की योजना है। इस तरह पांच वर्ष में पूरे प्रदेश में कुल 126 लाख परिवारों को 8 औषधीय पौधे तीन बार प्रदान करने के लिए 30.36 करोड़ पौधे तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा एवं कालमेघ के तैयार किए जाएंगे। राज्य सरकार के द्वारा इस पंचवर्षीय योजना हेतु 210 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। प्रथम वर्ष में 31.40 करोड़ रुपए व्यय होंगे, जिससे 5.06 करोड़ पौधे तैयार कर 63.25 लाख परिवारों को लाभान्वित किया जाएगा। राज्य के प्रत्येक जिले की पौधशालाओं में इन चार प्रजातियों के औषधीय पौधे तैयार किए जा रहे हैं। इस योजना की सफल क्रियान्विती हेतु वन विभाग को नोडल विभाग बनाया गया है। साथ ही इस योजना में जिला प्रशासन, आयुर्वेद विभाग, ग्रामीण विकास विभाग आदि राजकीय विभागों, स्वयं सेवी संस्थाओं व कॉर्पोरेट सेक्टर आदि का भी सहयोग लिया जा रहा है। इस तरह कोरोना महामारी में संपूर्ण लॉकडाउन के दौरान न्यूनतम मानव दखल से प्रकृति के मूल स्वरूप को संवरने, पुष्पित एवं पल्लवित होने का सुनहरा अवसर मिला है।

पौधरोपण तकनीक

तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ व गिलोय को गमले में अथवा जमीन में रोपित किया जा सकता है। गमले में लगाने के लिए न्यूनतम 12 इंच के गमले में खाद व मिट्टी के मिश्रण से भरकर पौधा रोपित किया जाना चाहिए। ध्यान रहे कि परिवहन एवं रोषण तक पौधे का मिट्टी का पिण्ड नहीं टूटे। गिलोय एक काष्ठीय लता है जिसे किसी भी वृक्ष अथवा सहारे से संवर्धित की जा सकती है। अवलम्ब प्रदान करने वाले वृक्ष के गुण भी इसमें आ जाने के कारण नीम पर विकसित गिलोय (नीम गिलोय) की उपयोगिता अधिक मानी गई है। इसलिए गिलोय के पौधे को नीम के वृक्ष के नीचे लगाकर संरक्षित व संवर्धित करना उत्तम है।

आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा एवं कालमेघ का उपयोग

पौधा	उपयोगी भाग	उपयोग
तुलसी	पत्तियां	रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, जुकाम, खांसी, वायरल बुखार, माइग्रेन, वात व्याधि, चर्म रोग आदि में लाभकारी
अश्वगंधा	जड़	शारीरिक व मानसिक शक्तिवर्धक, अनिद्रा, तनाव, अवसाद, स्मरणशक्ति, सूजन, गठिया, यौन समस्या आदि में लाभकारी।
कालमेघ	पंचाग	वायरल, एलर्जी, ट्यूमर, बुखार, मूत्र, यकृत एवं उदर संबंधी व्याधियों आदि में उपयोगी
गिलोय	तना	रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक वायरल रोग, ज्वर मधुमेह, मूत्र रोग, बवासीर, खांसी, अस्थमा, यकृत संबंधी रोगों में लाभदायक

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि राजस्थान सरकार ने इस चयनित औषधीय वृक्षों को प्रत्येक परिवार तक घर-घर पहुंचाने की व्यवस्था की है, जिससे प्रदेश की जनता के पर्यावरण व प्रकृति के बीच लाभकारी संबंध और प्रगाढ़ होंगे।

एक ओर जहां 'हरित राजस्थान स्वस्थ राजस्थान' की इस महत्वाकांक्षी योजना से आमजन के लिए परम्परागत रूप से अपने परिवार को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त होगा, वहीं दूसरी ओर प्रदेश की प्राकृतिक वन संपदा एवं जैव विविधता संरक्षण के प्रति जनता को अधिक जागरूक बनाया जा सकेगा, जिससे प्रदेश की जनता स्वास्थ्य के लिए जड़ी-बूटियों के रोपण, उपयोग, लाभ एवं उनके औषधीय व पर्यावरणीय महत्व को समझ पाएगी।

(लेखक भारतीय वन सेवा के अधिकारी हैं)

Jinendra Vanawat
Director

RS-CIT

Mob. No. 8003699621

Everest Technical EDUCATION PVT. LTD.

(A Company Dedicated for Skill Development)
Corp. Off.: 229, IInd Floor, Anand Plaza
University Road, Udaipur (Raj.) 313 001
Ph.: (0294) 5101501 E-mail.: j_vanawat@hotmail.com

Authorised Service Provider

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

RAJASTHAN KNOWLEDGE CORPORATION LIMITED
(A Public Limited Company Promoted by Govt. of Raj.)
Head off.: 7 A, Jhalana Institutional Area, Jaipur - 302004 www.rkcl.in

ध्यान
क्रिया नहीं, समर्पण

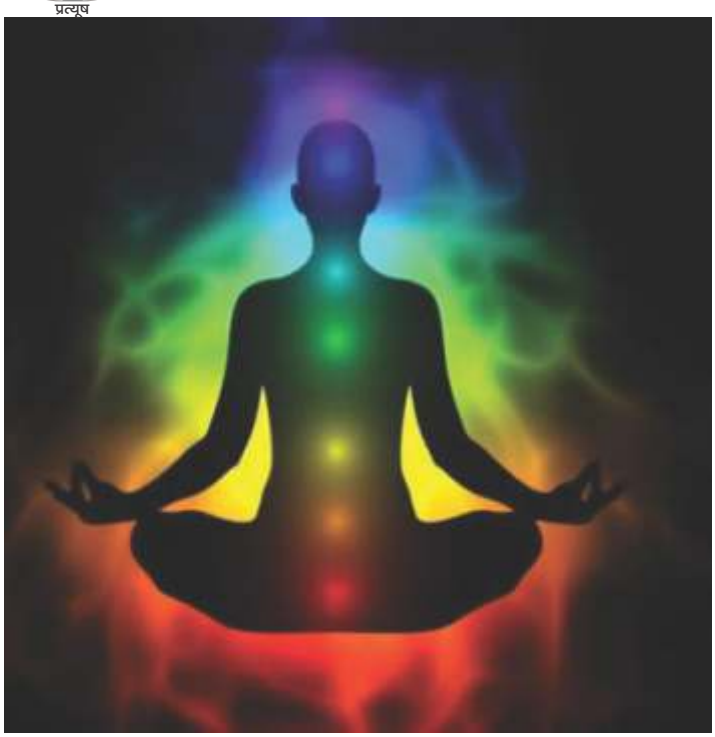

जिस तरह दवाएं शरीर से बीमारियों को दूर करती हैं, उसी तरह ध्यान अंतस को स्वस्थ करता है। ध्यान अपनी जागरुकता और हृदय तथा सभी इन्द्रियों की संवेदनशीलता को तेजी से बढ़ाता है। ध्यान हमारी भावनाओं में वृद्धि करता है और सकारात्मकता को भी बढ़ाता है। यही सकारात्मकता और भावनाएं हमें ईश्वर के निकट ले जाती हैं।

डॉ. ओशो शैलेन्द्र

ध्यान का मतलब कुछ करना नहीं है। ध्यान है पूर्ण विश्राम की अवस्था में सांसों के प्रति चेतना। पूर्ण मतलब शरीर, मन और हृदय यानी क्रिया, सोच-विचार और भावनाओं- तीनों के विश्राम की अवस्था। ध्यान प्रयास से नहीं आता। जब भी आप ध्यान में उतरने का प्रयास करेंगे, खलल पड़ेगा। हां, जैसे ही आप अपने को पूरी तरह छोड़ देंगे, आपको पता भी नहीं चलेगा कि आप कब ध्यान में उतर गए।

तीन तल हैं हमारी क्रियाओं के। एक शरीर का तल है, जहां हम कुछ कर्म करते हैं। दूसरा तल मन का है, जहां हम सोचते-विचारते हैं। तीसरा तल है - हमारे हृदय का, भाव के जगत का - जहां हम अनुभव करते हैं भावनाओं का। इन तीनों के भीतर एक चौथा तल और है। यह किसी कर्म का तल नहीं है। वहां सिर्फ प्राण है - सिर्फ चेतना है, जहां जब हम शरीर, मन या हृदय से कुछ भी नहीं कर रहे होते।

हम समझते हैं कि अगर हम बीमार नहीं हैं तो हम स्वस्थ हैं, लेकिन बीमार न होने का मतलब स्वस्थ होना नहीं है। कुछ और भी चाहिए। ध्यान वही चीज है। यह हमारी आध्यात्मिक बीमारियों का उपचार है।

ध्यान हमें उचित परिप्रेक्ष्य में घटनाओं को परखने की दृष्टि देता है। ध्यानी से मिल कर आपको उसकी आंतरिक खुशी और शांति का स्पष्ट अनुभव होगा। जो ध्यान करेगा, उसमें अतीन्द्रिय क्षमता अवश्य विकसित होगी और यह उसमें जीवन का परम उद्देश्य खोजने के प्रति चेतन बनाए रखता है। ध्यान का शून्य नई सूझ-बूझ भरता है। इस बात की प्रबल संभावना होती है कि ध्यानी स्वतंत्र व आत्मनिर्भर विचारों का स्वामी होगा। उसकी वृत्ति आविष्कारक, सृजनात्मक, कलात्मक व साहित्यिक होगी। ध्यान स्व-यथार्थ बोध यानी सेल्फ-एक्चुलाइजेशन में मददगार है। यह सेवा कार्य में आपकी रुचि बढ़ाएगा। आत्म-ज्ञान की संभावना का द्वार ध्यान से ही खुलता है और न सिर्फ खुद के बारे में, बल्कि दूसरों की भी गहरी समझ पैदा होती है।

यह ध्यान ही है, जिससे तन-मन और चेतना के बीच के सामंजस्य की अखंडता को समझना और उसे साधना संभव होता है। इससे आध्यात्मिक विश्राम की गहराई में डुबकी लगती है और व्यक्ति विकार रुपी शत्रुओं से मुक्त होने लगता है, जिससे दूसरों की उन्नति के प्रति सहर्ष स्वीकार का भाव बनता है।

ध्यान करने वाला वही नहीं रह जाता, जो पहले था। जीवन होगा और क्षमाभाव भी। यह उसे ध्यान की उच्चतर अवस्था में ले जाने अर्थात् समाधि में उतारने में सहायक होता है, जिससे व्यक्ति का परमात्मा के साथ एक गहरा संबंध स्थापित होता है। वास्तविक योग यही है।

ध्यानी अंतर्मुखी जरूर होता है, मगर वह गंभीर नहीं होता। इसके विपरीत, वह तो जीवन की लीला को खेल की तरह लेता है। यही प्रवृत्ति उसे वर्तमान में जीने में मदद करती है, जिससे द्रष्टाभाव विकसित होता है और व्यक्ति के लिए स्वयं को घटना का साक्षीमात्र समझना आसान होता है। सत्ता और अहंकार से परे आत्म-चैतन्य की खोज में तल्लीन होने का यह परमसूत्र है। जो भी ध्यानी होगा, वह अकारण ही संतोष, आनन्द और मस्ती में दिखेगा। कारण बिल्कुल सीधा है - उसने दूसरों से तुलना करना छोड़ दिया है। जैसे ही आप अपने अनूठेपन से परिचित होते हैं, आपकी समझ में आ जाता है कि अन्य लोग भी आपकी ही तरह अद्वितीय हैं। फिर तुलना कैसी। जागरण की यह अवस्था सबके प्रति सहज सम्मान जगाती है। हमारे शरीर में ऊर्जा के सात तल हैं, जिनमें सबसे नीचे का तल मूलाधार कहलाता है और सबसे ऊपर का तल सहस्रार। प्रकृति केवल मूलाधार चक्र को सक्रिय करती है। बाकी चक्रों को सक्रिय करने के लिए व्यक्ति को प्रयास करना होता है। यदि व्यक्ति प्रयास नहीं करता तो उसकी

ऊर्जा आजीवन-मूलाधार चक्र पर ही रह जाती है और वह मूलाधार चक्र से ही विदा हो जाता है। चूंकि हमारी सारी ऊर्जा मूलाधार चक्र पर जमा रहती है या यों कहें कि कुंडली मार कर बैठी रहती है। इसलिए, वहां से ऊर्जा के ऊपर उठने को कुंडलिनी जागरण करते हैं। ध्यान की पूरी प्रक्रिया इन सातों चक्रों को सक्रिय करने का प्रयास है, क्योंकि आंतरिक जीवन की समृद्धि इसी से संभव है। कुंडली जागरण होते ही जीवन ऊर्जा का अनुभव सघन होने लगता है। ध्यानी का आज्ञाचक्र(त्रिनेत्र) सक्रिय होता है, जिससे उसके लिए आत्म-स्वामित्व का अनुभव कर पाना आसान होता है। आज्ञा चक्र की सक्रियता से अतीन्द्रिय ज्ञान के द्वार खुलते हैं और व्यक्ति पहली बार उस शक्ति से परिचित होता है, जिसे वास्तविक अर्थ में चमत्कार कहा जा सकता है। उसकी जिंदगी प्रेम, श्रद्धा, स्नेह, करुणा जैसी श्रेष्ठ भावनाओं से ओत-प्रोत हो जाती है। ऐसा व्यक्ति जब भी विदा होगा, गहन-शांति और स्वीकार भाव के साथ विदा होगा। ध्यान के लिए कोई

उपकरण नहीं चाहिए। ध्यान को समझना बिल्कुल आसान है। बच्चे-युवा-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, शिक्षित-अशिक्षित सभी इसे कर सकते हैं, किसी भी समय, कहीं भी इसका अभ्यास किया जा सकता है।

काकिणी गणना

डॉ. श्याम मनोहर व्यास

काकिणी गणना का ज्योतिष शास्त्र में बड़ा महत्व है। इस गणना के द्वारा आप सहज ही यह अनुमान लगा सकते हैं कि अमुक नगर, कस्बा या व्यवसाय आपके लिए शुभ है अथवा नहीं। काकिणी गणना नामाक्षर के आधार पर निकाली जाती है। व्यक्ति की काकिणी निकालने के लिए उसकी वर्ग संख्या को दोगुना करके उसके नगर या कस्बे का वर्ग जोड़ कर उसमें आठ का भाग दिया जाता है जो शेष बचता है, वह व्यक्ति की काकिणी होगी। इसी प्रकार नगर की वर्ग संख्या का दोगुना कर उसमें व्यक्ति का वर्ग जोड़ लें, फिर उसमें आठ का भाग दें, जो शेष बचता है वह नगर। कस्बे और गाँव की काकिणी होगी। यदि नगर से व्यक्ति की काकिणी संख्या अधिक हो, तो वह स्थान उस व्यक्ति के लिए शुभ है। संख्या यदि कम है तो अशुभ और यदि दोनों बराबर है तो वह स्थान व्यक्ति के लिए सामान्य है। यदि आप चाहें तो किसी कॉलोनी, व्यवसाय की भी काकिणी निकाल सकते हैं और जान सकते हैं कि वह शुभ है या अशुभ।

अब काकिणी निकालने या उसकी गणना की विधि क्या है, जानें।

विधि : स्वर एवं व्यंजन के नामाक्षर का वर्ग निम्न है :-

अ वर्ग : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं

क वर्ग : क, ख, ग, घ, ङ

च वर्ग : च, छ, ज, झ, ञ

ट वर्ग : ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग : त, थ, द, ध, न

प वर्ग : प, फ, ब, भ, म

य वर्ग : य, र, ल, व

श वर्ग : श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ

विधि

काकिणी गणना के लिए निम्न उदाहरण को देखें। मान लिजिये मोहनलाल शर्मा नामक व्यक्ति जयपुर में रहता है। उसके लिए यह नगर शुभ है या अशुभ। यह जानने के लिए दोनों के नामाक्षर से गणना करें।

मोहनलाल का वर्ग = प है। प का वर्ग हुआ = 6

इसका दुगुना = 6 × 2 दुआ = 12

च वर्ग के अनुसार जयपुर का वर्ग = 3

इस तरह मोहनलाल की काकिणी होगी =

$$\frac{6 \times 2 + 3}{8} = \frac{15}{8}$$

$$= 1\frac{7}{8}$$ (चूँकि शेष = 7 अत:)

काकिणी होगी = 7

अब जयपुर नगर की काकिणी देखें।

जयपुर नगर की काकिणी = 3 × 2 + 6 = 6 + 6 = 12

8 का भाग देने पर = $\frac{12}{8} = 1\frac{4}{8}$

(चूंकि शेष = 4 अत: जयपुर की काकिणी 4 हुई।)

यहाँ मोहनलाल की काकिणी 7 और जयपुर शहर की काकिणी 4 से अधिक है। अत: जयपुर शहर मोहनलाल के लिए शुभ है। यदि नगर का कोई अन्य नाम है तो उस नाम के नामाक्षर के अनुसार भी काकिणी निकाली जा सकती है। इसी प्रकार कॉलोनी, व्यवसाय आदि के प्रथम अक्षर को देख कर काकिणी की गणना की जा सकती है। गणना से पाठक जान सकते हैं कि व्यवसाय/कॅरियर या नगर व्यक्ति के लिए शुभ है अथवा नहीं। यदि नगर या व्यवसाय काकिणी के अनुसार अशुभ है तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रहों की स्थिति देख कर उपाय खोजे जा सकते हैं।

मीठे-मीठे मोदक

सबके प्रिय और प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश का जन्म दिवस (गणेश चतुर्थी) इसी माह 10 सितम्बर को है। गणेशजी को प्रिय मोदक घर में ही बनाएं और भोग लगाकर उनसे घर-संसार के कुशलक्षेम का आशीष प्राप्त करें।

रेणु शर्मा

बूंदी के मोदक

सामग्री : 400 ग्राम शुद्ध बेसन, 400 ग्राम चीनी, 1 कटोरी शुद्ध घी, आधा ग्राम केसर, एक चुटकी बेकिंग पाउडर, 1 टी स्पून इलायची पाउडर, 50 ग्राम किशमिश व काजू टुकड़ी मिक्स।

विधि : बेसन में बेकिंग पाउडर अच्छी तरह मिलाकर, छानकर घी और दूध मिलाकर घोल बनाएं। आंच पर कड़ाही में घी गर्म करें। एक झारी(चलनी) द्वारा बेसन का घोल गर्म-गर्म घी में छानें। एक चम्मच से बेसन का घोल हिलाते रहें। बूंदियों को सुनहरा होने तक तलें। अच्छी तरह पक जाने पर झारी से निकालकर एक छोटी परात में रख दें। चीनी की तीन तार की चाशनी बनाएं, इसमें केसर व इलायची पाउडर मिलाएं। थोड़ा ठण्डा हो जाने पर छोटे-छोटे गोल मोदक बनाएं। इन्हें किशमिश व काजू टुकड़ी से सजाकर, चांदी के वरक लगाकर एक थाली में जमा लें।

गरी के मोदक

सामग्री : 2 नारियल, 400 ग्राम मावा, 650 ग्राम चीनी, 250 ग्राम खसखस,150 ग्राम घी, केसर अपने अन्दाज से, बादाम कतरन व पिस्ता कतरन एक कप।

विधि : नारियल फोड़कर कच्ची गरी पिस लें। मंद-मंद आंच पर मावा भूनकर रख लें। खसखस को डेढ़ घंटे पानी में भिगो दें और पानी निथारकर पीस लें। आंच पर घी गर्म करके पिसी खसखस मंद आंच पर भून लें, भून जाए तो मावा डालकर 4-5 मिनट तक भून लें। कच्ची गिरी को भी कड़ाही में डालकर थोड़ी देर तक कलछी से चलाती रहें, ताकि उसका पानी भूनते हुए समाप्त हो जाए। आंच पर चीनी की चाशनी बना लें। उसमें नारियल का भूना किस, मावा व खसखस, केसर तथा मेवा डालकर 3-4 मिनट तक चलाएं। ठण्डा होने पर लड्डू बना लें, थोड़ा सा गरी का किस बिना भूना हुआ अलग रखें। लड्डू बनाकर गरी किस में एक-एक लड्डू लपेटकर थाली में रख लें।

शाही मोदक

सामग्री : 500 ग्राम पेठा, 400 ग्राम नारियल पाउडर, 500 ग्राम मावा, 500 ग्राम मिल्क मेड, 50 ग्राम बादाम चूरा, 50 ग्राम पिस्ता चूरा, आधा टी स्पून केसर, 20 पिसी इलायची।

विधि : पेठे को घिस कर इलायची, पिस्ता, बादाम चूरा, केसर अच्छी तरह मिला लें। इस मिश्रण को एक तरफ रख दें। मावे को मैश कर इसमें मिल्क मेड, नारियल बुरादा डालकर मिला लें। अब मावे के मिश्रण को बराबर-बराबर भागों में बांट लें। मावे वाले मिश्रण के बीच भरावन वाला मिश्रण रखकर लपेटते हुए लड्डू बनाकर पिस्तों व चांदी के वर्क से सजा दें।

बेसन मोदक

सामग्री : 2 कटोरी बेसन, आधी कटोरी घी, 1 कटोरी पिसी चीनी, 25 काजू, 20 बादाम, 1 टी स्पून इलायची पाउडर।

विधि : सबसे पहले बेसन को छानकर रख लें। काजू-बादाम के टुकड़े कर लें। आंच पर घी को एक कड़ाही में पिघलाएं। बेसन मिलाएं और घी के पककर सुगंध देने तक धीमी आंच पर भूने, भुने हुए बेसन में इलायची पाउडर मिलाएं और काजू-बादाम डालें। अच्छी तरह मिलाकर आंच से उतार लें। इस मिश्रण को कुछ देर ठण्डा होने दें। अंत में इसमें पिसी हुई चीनी डालें और अच्छी तरह मिला लें। अब इसके गोल-गोल लड्डू बनाकर सुनहरे वरक से सजा दें।

#राजस्थान_सतर्क_है
सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
यदि किसान कमज़ोर हो जाते हैं तो देश आत्मनिर्भरता खो देता है,
लेकिन अगर वे मज़बूत हैं तो देश की स्वतंत्रता भी मज़बूत हो जाती है
-राजीव गांधी
राजीव गांधी
(20 अगस्त 1944 - 21 मई 1991)
की 77वीं जयंती
सद्भावना दिवस
पर उन्हें शत-शत नमन
अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

एसपी बालासुब्रमण्यम ने एक दिन में रिकॉर्ड किए थे 21 गाने

दुर्गाशंकर मेनारिया

मखमली आवाज, सौम्य आवाज, सौम्य अंदाज, संगीत के ऐसे पुजारी जिसकी तारीफ करते लता मंगेशकर भी नहीं थकतीं। एसपी बालासुब्रमण्यम अब हमारे बीच नहीं हैं। 25 सितम्बर 2020 को उनका हुआ। कोरोना होने से कई हफ्तों तक उनकी हालत नाजुक रही और वह लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर रहे। नेल्लौर के तेलुगू परिवार में 4 जून 1946 को पैदा हुए बाला सुब्रमण्यम के पिता एसपी सम्बामूर्ति हरीकथा और नाट्यमंच के कलाकार थे, जबकि उनकी मां शाकुंतला अम्मा हाउस वाइफ थीं। एसपी बाला सुब्रमण्यम के बेटे एसपी चरण भी साउथ सिनेमा के जाने-माने सिंगर एक्टर और प्रोड्यूसर हैं।

परिवार में पत्नी और दो बच्चे

निजी जिंदगी की बात करें तो एसपी बालासुब्रमण्यम के परिवार में पत्नी सावित्री के अलावा दो बच्चे हैं। उनकी बेटी पल्लवी है, जबकि बेटे का नाम एसपी चरण।

सलमान को दी थी पर्दे पर पहचान

1966 से शुरुआत

साल 1966 में तेलुगू फिल्म से सिंगिंग कॅरिअर की शुरुआत करने वाले एसपी बाला सुब्रमण्यम ने 1981 में बॉलीवुड फिल्म 'एक-दूजे के लिए' से हिन्दी फिल्मों में गाना शुरु किया। उनकी संगीत साधना का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने हिन्दी में 1 दिन में 16 गाने रिकॉर्ड किए। जबकि कंपोजर उपेन्द्र कुमार के लिए 8 फरवरी 1981 को सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक 21 गाने रिकॉर्ड किए थे।

जब सलमान का मतलब था एसपी बाला सुब्रमण्यम

बॉलीवुड में एसपी बाला सुब्रमण्यम की पॉप्युलेरिटी 1989 में तब बढ़ी, जब उन्होंने सलमान खान की फिल्म 'मैंने प्यार किया' के लिए गाने गाए। इस फिल्म के सभी गाने सुपर-डुपर हिट हुए। 90 के दशक में सलमान की हर फिल्म में एसपी बालासुब्रमण्यम ही उनकी आवाज बने। 'आजा शाम होने आई' से लेकर 'मेरे रंग में रंगने वाली' तक बाला सुब्रमण्यम ने हिन्दी गानों के साथ खूब दिल्लगी की। पर्दे पर सलमान खान का मतलब एसपी बाला सुब्रमण्यम थे और एसपी बाला सुब्रमण्यम का मतलब सलमान खान।

चित्तौड़ा को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर. सूक्ष्म पुस्तिकाओं व कलाकृतियों के शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को मेजिक बुक ऑफ रिकॉर्ड, नई दिल्ली की ओर से लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड 2021 प्रदान किया गया। संस्थान के चेयरमेन डॉ. सी.पी. यादव ने बताया कि पिछले दो दशकों से चित्तौड़ा इस क्षेत्र में सक्रिय है, जिन्होंने सूक्ष्म कला को अपनी कृतियों से नया आयाम दिया है। उदयपुर में चित्तौड़ा ने यह अवार्ड वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी स्र ग्रहण किया। चित्तौड़ा ने बताया कि उन्होंने अब तक विविध सामग्रियों के उपयोग से 1151 सूक्ष्म कलाकृतियां बनाई हैं।

महके और महकाएं

CHITTORA AGARBATTI INDUSTRIES UDAIPUR CAI

राजेश चित्तौड़ा
9414160914

CHITTORA
AGARBATTI INDUSTRIES

Mfg. : Handmade Agarbatti 'N' Perfumers
Glass Bottles etc.

1,2 Central Jail Colony Nr. Central Jail, Tekri Road Udaipur (Raj.)
Email : rajeshchittora27@gmail.com

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का पूर्वार्द्ध सुकून भरा रहेगा, आत्मबल बरकरार, परिश्रम एवं पराक्रम से उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे, परिवार में शुभ एवं मंगल कार्य होंगे, संतान संबंधी चिंताएं रहेंगी, गुप्त शत्रुओं से परेशानी हो सकती है। आय पक्ष प्रबल है, पैतृक मामलों में उलझनें, स्वास्थ्य मध्यम।

वृषभ

व्यर्थ के कार्यों एवं भागदौड़ से आर्थिक नुकसान संभव,, मन की अशांति एवं क्रोध से बनता काम बिगड़ सकता है, स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, संतान पक्ष की चिंताएं समाप्त होगी। व्यापार एवं नौकरी में सफलता मिलेगी

मिथुन

यह माह मान-सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि कराएगा, हालांकि व्यवसाय को लेकर परेशानी रहेगी, धैर्य रखें। किसी भी प्रकार के लेन-देन में पूर्ण सावधानी रखें। परिवार के सहयोग से आर्थिक उन्नति। माह के उत्तरार्द्ध में राजकीय एवं न्यायिक मामले पक्ष में बनेंगे। वाहन का प्रयोग सावधानी से करें।

कर्क

अकस्मात द्रव्य की प्राप्ति। रूका कार्य परिवार के सहयोग से पूरा होगा। मांगलिक कार्य भी संपादित होंगे। स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रह सकती है। व्यर्थ की भागदौड़ से बचें। इस समयावधि में मानसिक अशांति रह सकती है। साझेदारी लाभप्रद रहेगी।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध आशानुरूप एवं फलदायी, आत्मबल में वृद्धि, निवेश की नई योजना बनाएंगे, यात्रा योग भी है। स्वास्थ्य संबंधित विशेष सावधानी रखे, अति आत्मविश्वास हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

कन्या

इस माह में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, व्यवसाय में आ रही बाधाएं दूर होंगी। राजकीय कर्मचारियों को पदोन्नति एवं स्थान परिवर्तन के योग, स्थाई सम्पत्ति में निवेश के लिए समय अनुकूल नहीं है। वरिष्ठजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम, संतान पक्ष मध्यम।

तुला

यह माह व्यावसायिक उन्नति प्रदान करेगा। धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। शारीरिक कष्ट के योग, नेत्र या गुप्त रोग से परेशानी हो सकती है। स्थाई कार्यों में निवेश लाभप्रद रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
3 सितम्बर	भाद्रपद कृष्णा एकादशी	पर्युषण प्रारंभ
4 सितम्बर	भाद्रपद कृष्णा द्वादशी	बछ बारस/गो वत्स पूजा
5 सितम्बर	भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी	शिक्षक दिवस
9 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला तृतीया	हरितालिका तीज
10 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी	गणेश चतुर्थी
11 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला पंचमी	संवत्सरी महापर्व
14 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला अष्टमी	हिंदी दिवस/राधा अष्टमी
16 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला दशमी	बाबा रामदेव जयंती/तेजा दशमी
17 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला एकादशी	विश्वकर्मा पूजा/जलझूलनी एकादशी
19 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी	अनंत चतुर्दशी
20 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा	श्राद पक्षारंभ
21 सितम्बर	आश्विन कृष्णा प्रतिपदा	जैन क्षमावाणी पर्व

वृश्चिक

मानसिक तनाव एवं क्रोध से बनते कार्य बिगड़ सकते हैं, व्यावसायिक हालात धीरे-धीरे अनुकूल होने से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, भूमि, वाहन मकान आदि सुख साधनों पर विशेष खर्च करेंगे। प्रतियोगी विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी।

धनु

वृद्धजन का मार्गदर्शन मिलेगा, व्यवसाय में सफलता मिलेगी, मित्रों में ज्यादा खर्च करेंगे। भाग्य का पूर्ण सहयोग, वाहन चलाने में सावधानी रखें। संतान पक्ष से संतोष, दाम्पत्य जीवन में हर्षोल्लास, साझेदारी लाभ देगी।

मकर

वाणी संयम रखें, पारिवारिक सहयोग में कमी, व्यवसाय के क्षेत्र में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। परंतु सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, पुरुषार्थ एवं भाग्य के बल से कुछ नया कर सकते हैं , संतान पक्ष से चिंता।

कुम्भ

विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ एवं प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी, कारोबार में व्यस्तता, व्यवसाय में कुछ परिवर्तन संभव, यात्रा योग होगा। प्रिय बंधु से मुलाकात होगी, किसी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संघर्ष पूर्ण, जीवन साथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मीन

माह के उत्तरार्द्ध में आय के नए स्रोत्र, राजकीय लाभ संभव, भागदौड़ रहेगी, जिससे उत्पन्न क्रोध एवं उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। घर में मांगलिक कार्य होंगे, परिवार के सहयोग से नया कार्य आरंभ, दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं हर्षोल्लास पूर्ण रहेगा।

अरुण जोशी एवं गोविन्द पारीक बने अतिरिक्त निदेशक

जयपुर। राज्य सरकार ने पिछले दिनों एक सूचना जारी कर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के 7 अधिकारियों को पदोन्नत किया है। विभाग में अरुण कुमार जोशी तथा गोविन्द नारायण पारीक को अतिरिक्त निदेशक, महेश शर्मा को संयुक्त निदेशक, लोकेश शर्मा उपनिदेशक तथा कविता जोशी, सौरभ सिंघारिया तथा शरद केवलिया को सहायक निदेशक के पद पर पदोन्नत किया गया है।

अरुण कुमार जोशी

गोविंद पारीक

कविता जोशी

महेशचन्द्र शर्मा

लोकेश शर्मा

अरुण कुमार जोशी ने मुख्यालय में समाचार शाखा तथा गोविन्द नारायण पारीक ने पुलिस विभाग के अतिरिक्त निदेशक का पदभार संभाला है।

इसी प्रकार महेश चन्द्र शर्मा ने संयुक्त निदेशक प्रशासन, लोकेश चन्द्र शर्मा ने उपनिदेशक, साहित्य तथा सहायक निदेशक पद पर पदोन्नत अधिकारी कविता जोशी ने समाचार शाखा, सौरभ सिंघारिया ने सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, राजसमंद में पदभार ग्रहण किया है। शरद केवलिया ने राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर में सहायक निदेशक के पद का पदभार ग्रहण किया है।

लोक अधिकार मंच सम्मेलन

उदयपुर। पिछले दिनों होटल योईस में लोक अधिकार मंच का संभागीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें संभाग के विभिन्न जिलों के अध्यक्षों ने शपथ ग्रहण की। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, डॉ. बसन्तीलाल बाबेल व रामचन्द्र सिंह झाला थे। मुख्य वक्ता शांतिपीठ के संस्थापक प्रबुद्ध विचारक अनन्त गणेश त्रिवेदी थे। आलोक संस्थान के डॉ. प्रदीप कुमावत ने शपथ दिलाई। आयोजक एवं नवनिर्वाचित उदयपुर जिलाध्यक्ष एडवोकेट भरत कुमावत, अब्दुल जब्बार जिलाध्यक्ष चित्तौड़गढ़, महेश वर्मा, नगर अध्यक्ष राजसमंद सहित अन्य पदाधिकारियों कपिल पालीवाल, तरुण जोशी, मोनिका जैन, राकेश कोठारी, रामचन्द्र पालीवाल, जगदीश स्वर्णकार, हरिनारायण डाबी आदि ने शपथ ली। अतिथियों का स्वागत संभागीय अध्यक्ष फतहलाल गुर्जर अनोखा व राजसमंद के अध्यक्ष कन्हैयालाल त्रिपाठी ने किया। प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट सम्पत्त लड्ढा ने लोक अधिकार मंच की अवधारणा व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि विकास संस्थान के अध्यक्ष योगेश कुमावत, राव रतन सिंह, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मनीष शर्मा व मोतीसिंह राणावत थे।

इनका हुआ सम्मान

सम्मेलन में वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी, डॉ. रचना तैलंग, इंजीनियर ज्ञान प्रकाश सोनी, माया सालवी, भानुप्रताप सिंह कृष्णावत, आंचल कुमावत, ओ. पी. टांक, हाजी मोहम्मद बक्ष, बसंती देवी, घनश्याम पटवा, नीता कुमावत को उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

उदयपुर अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक की आमसभा

उदयपुर। उदयपुर अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक लि. उदयपुर की 48वीं वार्षिक आमसभा वर्चुअल हुई। इसमें बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कुतुबुद्दीन शेख ने गत आमसभा की कार्यवाही रिपोर्ट पेश की। बैंक के अध्यक्ष फिदा हुसैन सफी ने बताया कि सन् 2020-21 में बैंक की जमाएं 748.08 करोड़ रुपए, अग्रिम 321.36 करोड़ रुपए है। बैंक को कर पूर्व लाभ 1145.52 लाख रुपए हुआ।

रामेश्वर डेयरी का शुभारंभ

उदयपुर। नवरत्न कॉम्पलेक्स क्षेत्र में अर्चना ग्रुप के निदेशक सौरभ पालीवाल ने रामेश्वर डेयरी का शुभारंभ किया। संचालक रमेश डांगी ने स्वागत किया। कार्यक्रम में मावली के पूर्व विधायक दलीचंद डांगी, अर्जुन पालीवाल, राज बारोलिया, करण सिंह आदि भी उपस्थित थे।

सामर व खंडेलवाल प्रदेश संयोजक

प्रमोद सामर प्रवीण खण्डेलवाल प्रकाश अग्रवाल

उदयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने प्रदेश कार्यसमिति सदस्य प्रमोद सामर को सहकारिता प्रकोष्ठ का प्रदेश संयोजक, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण खंडेलवाल को विधि प्रकोष्ठ का प्रदेश संयोजक और प्रकाशचंद्र अग्रवाल को विशेष संपर्क प्रकोष्ठ का सह संयोजक व राजेश चौधरी को खेल प्रकोष्ठ का सह संयोजक नियुक्त किया है।

गुजराती भवन में कैंटीन का शुभारंभ

उदयपुर। गुजराती समाज भवन में आधुनिक कैन्टीन नयन डाइनिंग हॉल का उद्घाटन गुजराती समाज ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष नयन भाई गांधी ने किया। इस अवसर पर पूर्णिमा बेन गांधी एवं परिवार भी उपस्थित था। स्वागत समाज अध्यक्ष नानजी भाई पटेल, सचिव राजेश बी मेहता, रमेश भाई पटेल व नरेन्द्र भाई चौहान ने किया।

साहू राष्ट्रीय संयुक्त सचिव

उदयपुर। अखिल भारतीय तैलिक साहू महासभा के महामंत्री रामलाल गुप्ता ने उदयपुर के सुखलाल साहू को राष्ट्रीय संयुक्त सचिव नियुक्त किया है।

भरत जिलाध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। एडवोकेट भरत कुमावत को पिछले दिनों यहां आयोजित लोक अधिकार मंच के संभागीय सम्मेलन में उदयपुर जिलाध्यक्ष मनोनीत कर कार्यकारिणी गठन का निर्देश दिया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व न्यायाधीश डॉ. बी एल बाबेल, प्रदेश अध्यक्ष सम्पत कुमार लड्ढा व संभागीय अध्यक्ष फतहलाल गुर्जर भी मौजूद थे।

झंवर अध्यक्ष, कुमावत महामंत्री

जयदीप झंवर के.के. कुमावत

उदयपुर। सैनिटरी डीलर्स एसोसिएशन के द्विवार्षिक चुनाव चुनाव अधिकारी सुरेन्द्र जैन के सान्निध्य में सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से जयदीप झंवर अध्यक्ष, के. के. कुमावत महामंत्री एवं रमेश बया कोषाध्यक्ष चुने गए।

आशुलिपि पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। विजयसिंह चौहान द्वारा लिखी 'हिन्दी आशुलिपि -उच्च गतिवर्धक वाक्यांश' (भाग-7) का विमोचन पूर्व अतिरिक्त निदेशक माइंस एण्ड जुओलॉजी, सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर डी.एस. मेहता-पूर्व डायरेक्ट माइंस, महेन्द्र सोमानी-रिजनल डायरेक्टर, सुनील वशिष्ठ-जनरल मैनेजर (एच.जेड.एल.) बी.एस. यादव-भूवैज्ञानिक, एन.एस. खमेसरा-अतिरिक्त निदेशक के अलावा काफी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि आशुलिपि विषय पर चौहान द्वारा पूर्व में 10 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। इस पुस्तक में करीब 7500 प्रचलित एवं नवीन वाक्यांशों को सम्मिलित किया गया है।

अजय जगा रहे रक्तदान की अलख

उदयपुर। अजय खतूरिया(अजय मार्बल)अब तक 61 बार गंभीर घायलों-बीमारों, एनीमिया ग्रसित महिलाओं आदि के जीवन को बचाने के लिए नि:स्वार्थ भाव से रक्तदान कर चुके हैं। कोरोना काल में भी रक्तदान किया और अपने परिचितों को भी प्रेरित किया। अजय अपने पिता जवाहरलाल खतूरिया की स्मृति में रक्तदान करते हैं। उनके पिता व्यवसाय के सिलसिले में साल 2000 में कुवैत गए थे, जहां एक सड़क हादसे में घायल हुए। सिर में गहरी चोट से वे कोमा में चले गए। कुवैत में कोई साथ नहीं होने की वजह से एक यूनिट ब्लड तक नसीब नहीं हो सका। ब्लड नहीं मिलने से पिता की मौत हो गई। उसी दिन इन्होंने संकल्प लिया कि रक्तदान की अलख जगाएंगे। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की मदद के लिए अन्नदान-वस्त्रदान भी करते हैं।

रास में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर

बांगड़ सिटी(रास)। श्री सीमेंट लिमिटेड में सप्त दिवसीय नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर से 850 लोग लाभान्वित हुए। वाहन चालकों को जांच के बाद चश्मे प्रदान किए गए। कम्पनी के वरिष्ठ महाप्रबंधक बी. एल. शर्मा ने बताया कि श्री फाउण्डेशन ट्रस्ट सामाजिक सरोकार का निर्वहन में समय-समय इस तरह के समाजोपयोगी कार्य करता रहा है। शिविर समापन पर डॉ. राकेश शर्मा, कुन्दन बिरथरे, रोहित शर्मा, पवन गांधी, आशीष मित्तल भी उपस्थित थे। अरावली संस्था से सम्बद्ध आप्टामट्रिस्ट प्रदीप नंदवाना, जितेन्द्र यादव, सुमेर सिंह, अजय सिंह शेखावत, कुशाल शेखावत आदि ने सेवाएं दीं।

हरिवंश राय बच्चन:अनछुए परिदृश्य का विमोचन

उदयपुर। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. के. के. शर्मा ने कहा कि कविवर हरिवंश राय बच्चन की कविता जीवन की कविता है। वे कस्तूरबा मातृ मंदिर में डॉ. जयप्रकाश भाटी नीरव की सद्य प्रकाशित कृति 'हरिवंश राय बच्चन : अनछुए परिदृश्य' का विमोचन कर रहे थे। आरम्भ में लेखक डॉ. नीरव ने पुस्तक में समाहित कवि बच्चन के जीवन की अनछुए प्रसंगों व रचनाधर्मिता की जानकारी दी। वरिष्ठ पत्रकार-लेखक विष्णु शर्मा हितैषी ने पूर्व प्रकाशित बच्चन और उनके साहित्य शोध ग्रंथ के जिक्र के साथ उनकी अब तक की रचना यात्रा पर प्रकाश डाला। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. लक्ष्मीनारायण-नन्दवाना ने प्रकाशक हिमांशु पब्लिकेशन्स के हरीश आर्य के परिश्रम को सराहा। डॉ. लक्ष्मीलाल वर्मा, डॉ. अंजना गुर्जर गौड़ व डॉ. मनीष जैन ने भी विचार व्यक्त किए।

डॉ. सरीन को गोल्डन अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के बाल विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सरीन को लाइफ टाइम गोल्डन अचीवमेंट दिया गया। बी. आर. पब्लिशिंग हाउस के सचिव आर. के. चौहान ने बताया कि डॉ. सरीन को यह पुरस्कार उनके द्वारा बाल चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया।

127 यूनिट रक्तदान

उदयपुर। रक्तदान दिवस पर 127 यूनिट रक्तदान हुआ। रक्तदान महादान चेरिटेबल ट्रस्ट के सचिव आयुष अरोड़ा ने बताया कि पार्षद रक्तवीर रवीन्द्र पाल सिंह कप्पू ने अपने जन्मदिन पर 93वीं बार रक्तदान किया। मुख्य अतिथि कृष्ण गोपाल शर्मा एवं पंकज कुमार शर्मा, विधायक फूल सिंह मीणा, डॉ. खलील अगवानी, सिराज खिलोने वाला, दिनेश श्रीमाली, गौरव प्रताप सिंह, बार एसोसिएशन अध्यक्ष मनीष शर्मा आदि उपस्थित थे।

मीरा ने साधना का नया वेदांत दिया : सारंगदेवोत

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के मीरा अध्ययन एवं शोध पीठ की ओर से गत दिनों प्रतापनगर स्थित सभागार में मीरां से सम्बन्धित किवदंतियां और सत्यता विषयक संगोष्ठी सम्पन्न हुई। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मीरां के अलौकिक व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के साथ ही उनके काव्य तथा भजनों को मंदिरों में गाए जाने की परम्परा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मीरा ने साधना को नया वेदांत दिया। भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान नई दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष रामकृष्ण गोस्वामी ने कहा कि शिक्षक को कृष्ण की तरह होना चाहिए, जो इच्छानुसार निर्णय करने की

प्रेरणा देता है। पुलिस उप अधीक्षक चेतना भाटी ने कहा कि मीरा ने मानवाधिकार, वर्ग भेद, वर्ण भेद, पर्दा प्रथा आदि बुराइयों का 500 साल पहले विरोध किया, जिसे आज हम लागू करवने की बात कर रहे हैं। पीजी डीन प्रो. जीएम मेहता ने कहा कि भक्ति आंदोलन में मीरा पीड़ा की साक्षात प्रतिमूर्ति थी। उसी पीड़ा से मीरा के काव्य में संगीत है, लय है। उन्होंने कुलपति प्रो. सारंगदेवोत द्वारा मीरा पीठ के लिए एक लाख रुपए अपनी ओर से देने की घोषणा का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इससे संचालन में मदद मिलेगी। मीरा पीठ के मानद निदेशक प्रो. कल्याण सिंह ने कहा कि मीरां ने जन को अपना लिया इसलिए वह लोक में जीवित है। हमारे देश में तीन विश्वविद्यालय मीरां पर अनुसंधान कर रहे हैं जबकि यूरोप के 47 विश्वविद्यालयों में मीरां पर शोध कार्य हो रहा है। रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच सहित बड़ी संख्या में विद्वतजन मौजूद थे।

आचार्य ऋषि व सुरेन्द्र मुनि का जन्मोत्सव मनाया

बठिंडा(पंजाब)। स्थानीय जैन सभा भवन में पिछले दिनों आचार्य आनन्द ऋषि महाराज और सुरेन्द्र मुनि जी महाराज का जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर राजर्षि डॉ. राजेन्द्र मुनि ने गुरु आनन्द ऋषि जी महाराज को चलता-फिरता तीर्थ बताते हुए कहा कि उनकी पावन प्रेरणा से देश के अनेक भागों में स्कूल, कॉलेज, छात्रावास और गौशालाओं की स्थापना के साथ ही परोपकारी प्रकल्प संचालित हैं। आचार्यश्री की स्मृति में महाराष्ट्र के अहमदनगर में 40 करोड़ की लागत से अस्पताल का निर्माण करवाया गया हैं। सभा में विराजित साहित्यकार सुरेन्द्र मुनि जी महाराज के जन्मदिवस पर समाज द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के सामूहिक जाप के साथ उन्हें वन्दना व शुभकामनाएं अर्पित की गई। ज्ञानचन्द जैन शार्दूलगढ़ के सौजन्य से प्रभावना के रूप में भक्तों को चाँदी के सिक्के प्रदान किये गये।

शपथ ग्रहण समारोह

उदयपुर। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन दसा नरसिंहपुरा संस्थान का 9वां स्थापना दिवस, राष्ट्रीय युवा मोर्चा शपथ ग्रहण समारोह गत दिनों सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद कोठारी के स्वागत उद्बोधन के उपरांत संस्थान के परम संरक्षक कुंतीलाल जैन द्वारा संस्थान की संपूर्ण गतिविधियों के संबंध में जानकारी दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि राजेश जैन थे। समारोह में वर्ष 2020-2023 के लिए मनोनीत राष्ट्रीय युवा मोर्चा पदाधिकारियों को भंवरलाल पचोरी एवं कार्यकारिणी सदस्यों को विशिष्ट अतिथि हर्ष जैन बारोड द्वारा शपथ दिलाई गई। संचालन आलोक पगारिया ने किया।

वंडर क्रिकेट एकेडमी का अवलोकन

उदयपुर। फिल्म स्टार आदित्य पंचोली ने उदयपुर प्रवास के दौरान वंडर क्रिकेट एकेडमी का अवलोकन किया। पंचोली यहां खिलाड़ियों को मिल रही सुविधाओं को देखकर प्रभावित हुए। उन्होंने नेट पर कुछ देर बल्लेबाजी व गेंदबाजी की प्रैक्टिस भी की। जिला क्रिकेट संघ व भटनागर सभा के अध्यक्ष मनोज भटनागर व एकेडमी के मुख्य कोच मनोज चौधरी ने पंचोली को प्रतीक चिह्न भेंट किया।

खमेसरा अध्यक्ष, सुराणा महासचिव

राजेश खमेसरा कपिल सुराणा

उदयपुर। मार्बल प्रोसेसर्स समिति के चुनाव में राजेश खमेसरा अध्यक्ष और कपिल सुराणा को निर्विरोध महासचिव चुना गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. हितेष पटेल, उपाध्यक्ष रेवत सिंह राठौड़, कोषाध्यक्ष संजय कुमार कोठारी, संयुक्त सचिव डॉ. अनिल कुमार कटारिया, कार्यकारिणी सदस्य कैलाश राजपुरोहित, मंगलेश शाह, सुनील लूणावत, आनंद पटवा, कपिल पोद्दार, ऋषि कटारिया आदि भी निर्विरोध निर्वाचित हुए।

पूर्व पीएम वाजपेयी को पुष्पांजलि

उदयपुर। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की तीसरी पुण्यतिथि पर भाजपा ने उनको याद करते हुए पुष्पांजलि दी। भाजपा शहर जिला की ओर से भाजपा कार्यालय पर पुष्पांजलि अर्पित की गई और विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिलाध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली ने वाजपेयी को राजनीति में अजातशत्रु बताते हुए कहा कि वह ऐसा व्यक्तित्व था, जो संपूर्ण विश्व में सम्मानित था। विपक्षी भी उनके व्यक्तित्व के कायल थे। पूर्व प्रदेश मंत्री प्रमोद सामर ने कहा कि आज उन्हीं के आदर्शों और नीतियों पर चलकर भाजपा ने 300 से ज्यादा सीटों पर सफर तय किया। महापौर गोविंदसिंह टांक, उप महापौर पारस सिंघवी, शहर महामंत्री गजपालसिंह राठौड़, डॉ. किरण जैन आदि ने विचार रखे।

शोक संवेदना

उदयपुर। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी के अग्रज श्री ओमप्रकाश जी जोशी (सुपुत्र स्व. श्री भूदेव जी जोशी, नाथद्वारा) का 24 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी, पुत्र जयप्रकाश, पुत्रियां चन्द्रकला आचार्य, शशि शर्मा सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्री व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्री जोशी भाषाविद् थे। उन्होंने 'प्रत्यूष' में वर्ष 2011 में 'शब्द-कौतुक' स्तंभ के अन्तर्गत भाषा-सौन्दर्य पर नियमित आलेख लिखे। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, रघु शर्मा, प्रताप सिंह खाचरियावास, डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीर सिंह मीणा, गोपाल कृष्ण शर्मा, गुलाबचंद कटारिया, लालसिंह झाला, पंकज कुमार शर्मा, वीरेन्द्र वैष्णव, दिनेश श्रीमाली, विष्णु शर्मा हितैषी ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। पिता और पुत्र के देवलोकगमन में मात्र 24 घण्टे का अन्तर रहा। दोनों ही समाजसेवी व धर्मपरायण थे। श्री अनिल जी धुप्पड़ का 25 अप्रेल 2021 को आकस्मिक देहावसान हो गया। उनके निधन का दु:ख वृद्ध पिता श्री अर्जुनलाल जी धुप्पड़ पर भारी पड़ गया और वे भी 26 अप्रेल को स्वर्ग सिधार गए। अनिल जी अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी हंसा देवी, पुत्र धीरज धुप्पड़, पुत्री छवि मालू, राधिका एवं भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती कुशल देवी जी बोल्या (पत्नी स्व. भगवती सिंह जी) का 1 अगस्त को देहावसान हो गया वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र विरेन्द्र, प्रकाश व चन्द्रशेखर बोल्या, पुत्रियां निर्मला सुराणा, मंजू कोठारी तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती लाडकुंवर जी न्याती (धर्मपत्नी स्व. डॉ. सोहनलाल जी न्याती) का 2 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। धर्मोपासक श्रीमती न्याती अपने परिवार में व्यथित हृदय पुत्र सीए सुरेश न्याती, पुत्रियां सरला माहेश्वरी, पुष्पा राठी व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती संतोष देवी जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री नवल सिंह जी मेहता का 8 अगस्त को देहावसान हो गया। धर्मानुरागी श्रीमती मेहता अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र अनिल (पुत्रवधू ज्योति-स्व. सुशील जी) किशन मेहता व सुनील मेहता, पुत्रियां श्रीमती मंजू डांगी, मीनाक्षी चौधरी एवं उनका सम्पन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

भीण्डर। श्रीमती मंजू देवी साहू धर्मपत्नी श्री कमलेश साहू का 13 अगस्त को मुम्बई में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय, पति, सासु मां देऊबाई, पुत्र अविनाश, पुत्रियां राजरानी, निर्मला देवी एवं अनुष्का देवी तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री सुभाष जी लोढ़ा (46) का 7 अगस्त को दिवेर (राजसमंद) मार्ग पर सड़क दुर्घटना में दुखद देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता-पिता श्रीमती पुष्पा लोढ़ा- मदनेश जी लोढ़ा (हिजिलि), धर्मपत्नी श्रीमती वर्षा, पुत्री नुपूर, पुत्र राघव सहित भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर हिन्दुस्तान जिंक कर्मचारी संघ ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। समाजसेवी एवं उद्यमी श्री रामचन्द्र जी चौधरी (रूण्डेड़ा वाला) का 7 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती भंवर देवी पुत्र लोकेश चौधरी (समाज अध्यक्ष), दीपक चौधरी (पार्षद), पुत्रियां सुनीता देवी व उषा देवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री नितीश जी गांधी का 30 जुलाई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय माता श्रीमती सुलोचना देवी, धर्मपत्नी श्रीमती स्वाति, पुत्र सिद्धार्थ, पुत्रियां शिवानी व प्रियल व भाई-भतीजों का समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

बांसवाड़ा। श्री अनुराग जी चेलावत (अनुराग-ऋषभ आईस फैक्ट्री) का 27 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त माता-पिता श्रीमती निर्मला देवी-श्री जगत सिंह जी चेलावत, धर्मपत्नी श्रीमती अर्चना, पुत्री तन्वी लोढ़ा, पुत्र कार्तिक सहित भाई-भतीजों का परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। समाजसेवी श्री दलपत सिंह जी चौधरी का 26 जुलाई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र सचिन चौधरी, पुत्री नीतू मेहता व पौत्र-पौत्री तथा दोहित्र सहित भाई-भतीजों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री सुधीर जी सहगल का 26 जुलाई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता-पिता श्रीमती भूपिन्दर-सुरिन्दर कुमार सहगल, धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति, पुत्र शारन सहगल, पुत्री सौम्या मथारू सहित विशाल सहगल व मलिक परिवार छोड़ गए हैं।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सरस

स्वाद राजस्थान का...

Umesh Garg
Managing Director

ताज़गी का अहसास...
सरस के साथ...

1st in Dairy Cooperative Sector in India ISO License for packed pouch milk

उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि., उदयपुर

सरस विक्रय केंद्र पार्लर खोलने हेतु संपर्क करें फोन : 7427811222, 7427811444, 0294-2640188

उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ महिला बैंक

PROUDLY CO-OPERATIVE BANK

MAHILA SAMRIDHI BANK

हमारा ध्येय – आपकी समृद्धि

- Blue Ribbon Banco Award 2019
- Best North Based Bank Award-2019
- Best Mobile Banking App Award-2019
- Best Data Security Award-2019

SAMRIDHI BANK APP

RuPay

BHIM UPI

RTGS/NEFT

IMPS
IMMEDIATE PAYMENT SERVICE

BHARAT BILLPAY
BHARAT BILL PAYMENT SYSTEM
ANYTIME ANYWHERE BILL PAYMENT

Vidhyakiran Agrawal	Sunita Mandawat	Vinod Chaplot
Chairperson	Vice Chairperson	Chief Executive Officer

THE UDAIPUR MAHILA SAMRIDHI URBAN CO-OP BANK LTD.

H.O. : "Samridhi" 2/7, 1st Floor 100 Ft. Road, Sec-14, Goverdhan Vilas, Udaipur (Raj.) 313002
Tel . : +91 -294-2641003, 2640704, Fax : +91-294-2641003
web : www.samridhibank.com | email : ho@samridhibank.com

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.

सरस
सरस अपनाओ, सेहत पाओ

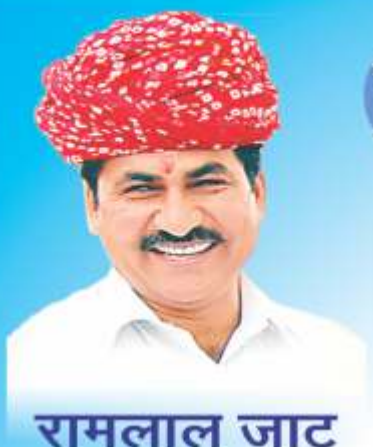

100% Milk Fat

शुद्ध ताजा और स्वादिष्ट

The Quality You Can Trust

रामलाल जाट
चेयरमेन ,भीलवाड़ा डेयरी
विधायक - माण्डल

ताजा दही

मावा कुल्फी

फ्लेवर्ड मिल्क

पनीर

ताजा छाछ

आईस्क्रीम

ISO 9001 & 22000, EMS & GMP CERTIFIED ORGANISATION FSSAI LIC NO. 10012013000072
Web: www.bhilwaradairy.com, E-mail: bhlmu-rj@gov.in
5 किमी, अजमेर रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राज.) कस्टमर केयर नं. 01482-264341

UNIQUE INFRA

ENGINEERING INDIA PVT. LTD.

Since 1994

'AA' CLASS CONTRACTORS

ABOUT US

Since 1994, we are working as Contractors in various fields of Civil Construction work i.e. Industrial Projects, Residential & Commercial Complex, Hotels & Resorts, Institution & Campus Development, Real Estate Projects, Road and Bridge Projects.

R.S YADAV GROUP

Recent Success

Successfully handed over 3 Medical College and Hospital Projects at Udaipur, Raj. during Covid-19 Pandemic.

R.S YADAV GROUP

UNIQUE INFRA ENGINEERING INDIA PVT. LTD. | Unique NRG RMC | मंगलमूर्ति Residency | Mount Litera Zee School UDAIPUR

2ND, FLOOR - MAHAVEER COMPLEX, 5-C MADHUBAN, UDAIPUR (RAJ.)

www.uniqueinfra.co.in